A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 19 मई, 2024

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 211 , नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्या: MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

सुकून भोपाल के तालाब के मध्य स्थित आशियानें पर पानी से टकराकर आती ठंडी लहरों से वैशाख की गर्मी में तपन से राहत पाने की जुगत में परिंदे!

फोटो: ऋतुराज बुड़ावनवाला, खाचरौद (उज्जैन)

हरियाणा में 'द बर्निंग ट्रेन' बनी चलती बस, 10 लोग जिंदा जले

बस में लगी भीषण आग, 25 से ज्यादा लोग झुलसे

मथुरा-वृंदावन से लौटते समय एक्सप्रेस-वे पर हुआ हादसा

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा में शुक्रवार देर रात करीब डेढ़ बजे कुंडली-मानेसर-पलवल एक्सप्रेस-वे पर श्रद्धालुओं से भरी चलती बस में आग लग गई। हादसे में 10 लोगों की मौत हो गई। जबकि, 25 से अधिक बुरी तरह झुलस गए। 8 लोगों की मौत मौके पर ही हुई, 2 ने अस्पताल में दम तोड़ दिया। घायलों ने बताया है कि हादसा नूंह जिले में तावडू गांव के पास हुआ। बस में 64 लोग सवार थे। ये सभी आपस में रिश्तेदार हैं और पंजाब-चंडीगढ़ के रहने वाले हैं। वे मथुरा-वृंदावन से दर्शन कर लौट रहे थे। आग की लपटें देख स्थानीय लोगों ने पुलिस और फायर ब्रिगेड को जानकारी दी। साथ ही खुद भी आग बुझाने का प्रयास किया। फायर ब्रिगेड ने मौके पर पहुंचकर आग पर काबू पाया। अभी आग के कारणों का पता नहीं चल सका है। पुलिस ने अधिकांश घायलों को नूंह के नल्हड़ स्थित मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया है। तावडू गांव के रहने वाले कुछ लोगों ने बताया कि उन्होंने बस में आग लगी देखी तो ड्राइवर को आवाज लगाकर रुकने को कहा। बस नहीं रुकी तो मोटरसाइकिल से पीछा किया और ड्राइवर को सूचना दी। तब तक आग काफी फैल चुकी थी। गांव वालों का कहना है कि उन्होंने अपने स्तर पर आग बुझाने का प्रयास किया था। पुलिस को भी जानकारी दी थी। तब तक कई लोग बुरी तरह झुलस चुके थे। उनमें से 8 की मौत हो चुकी थी। बस में आग लगने से हंसराज, पायल शर्मा, सोनी शर्मा, स्वतंत्र शर्मा, सुदेश कुमारी, उर्मिला शर्मा, निशा शर्मा, अंजू शर्मा, मीना रानी, कृष्णा, नरेश कुमार, जसविंदर राणा, बलजीत सिंह, पूनम, वाय कुमारी, शांति, आदि लोग घायल हुए हैं। कुछ लोगों की पहचान की जा रही है। वहीं, मृतकों में से अब तक 6 की पहचान हो चुकी है।

स्वाति मालीवाल केस में दिल्ली पुलिस का बड़ा ऐक्शन

सीएम हाउस से केजरीवाल के पीए विभव कुमार गिरफ्तार

मालीवाल की मेडिकल रिपोर्ट में हो गई चोट लगने की पुष्टि

नई दिल्ली (एजेंसी)। आम आदमी पार्टी की राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल मारपीट मामले में दिल्ली पुलिस ने जांच तेज कर दी है। दिल्ली पुलिस की एक टीम मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के आवास पर पहुंची। इस टीम में एडिशनल डीसीपी और सीएसपी भी मौजूद हैं। पुलिस ने सीएम केजरीवाल के पीए विभव कुमार को भी गिरफ्तार कर लिया है। शुक्रवार को भी दिल्ली पुलिस मालीवाल को लेकर सीएम हाउस पहुंची थी, और घटना का सीन सीक्रिएट किया। इसके अलावा दिल्ली पुलिस ने सीएम हाउस से 8 सीसीटीवी कैमरों के फुटेज भी इकठ्ठे किए थे। विभव कुमार की गिरफ्तारी के बाद दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि आश्चर्यजनक ये है कि उनकी गिरफ्तारी मुख्यमंत्री आवास के अंदर हुई है।

- **कोर्ट से बिभव कुमार को झटका, नहीं मिली राहत-** आप की राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल के साथ सीएम आवास में हुई मारपीट का मामला तूल पकड़ता दिख रहा है। स्वाति मालीवाल की एफआईआर के बाद दिल्ली पुलिस भी इस मामले में एक्शन मोड में आ गई है और पुलिस ने अरविंद केजरीवाल के पीए बिभव कुमार को गिरफ्तार कर लिया है। की पुष्टि की गई। अपनी गिरफ्तारी के विरोध में बिभव कुमार ने तीस हजारी कोर्ट अग्रिम जमानत याचिका दायर की थी। जिसपर कोर्ट ने कुमार की याचिका को खारिज कर दिया।

सुप्रभात

विडंबना

जिन्होंने जीते जी अपने द्वार से
किसी को भूखा न लौटाया
अंतिम समय में उन्होंने फाँके किये
बीघों में बनी हवेली की एक अंधेरी कोठरी में
उनके जीवन का अंतिम निःश्वास छूटा
जिन्होंने बाल्टियों दूध घर में ही नहीं
गाँव जवार में बाँटा
वो जाते जाते दूध की महक को तरस गए
सुना था उनकी अंतिम यात्रा में
जनसैलाब उमड़ा
भारी आयोजन हुआ
हज़ारों ने भरपेट खाया
परिजनों ने सेवा सुश्रुषा के
शब्दाडम्बर रचे
मर्ज़,उपचार की गंभीरता को समझाया
होनी अनहोनी के मर्सिये सुनाए
सब उनके ही आशीर्वाद की महिमा बतायी
उनके मार्ग पर चलने की कसमें खायीं
और एक भरपूर दूध देती
गाय दान दी गयी

- कौशलेन्द्र सिंह

कन्हैया कुमार को प्रचार के दौरान एक व्यक्ति ने जड़ दिया थप्पड़

- माला पहनाने के बहाने आया था, कन्हैया के समर्थकों ने हमलावर की पिटाई की

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली की नॉर्थ सीट से कांग्रेस और इंडिया ब्लॉक के प्रत्याशी कन्हैया कुमार के साथ चुनाव प्रचार के दौरान मारपीट का मामला सामने आया है। घटना का वीडियो सोशल मीडिया में वायरल हो रहा है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, एक व्यक्ति कन्हैया कुमार को माला पहनाने के बहाने आया और थप्पड़ मारना शुरू कर दिया। उसने कन्हैया पर स्याही भी फेंकी। कन्हैया के समर्थकों ने युवक को तुरंत पकड़ लिया और उसकी पिटाई शुरू कर दी। इस दौरान हमलावर को काफी चोटें आई हैं। हालांकि, कन्हैया कुमार सुरक्षित हैं। घटना के दौरान आम आदमी पार्टी की महिला पार्षद छाया शर्मा से भी हाथापाई की गई। इसे लेकर छाया ने पुलिस थाने में शिकायत की है।

अगर जरूरत हुई तो सुनवाई के लिए पूरी रात बैठेंगे

वोटिंग पर्सेंट बढ़ने पर 'सुप्रीम' सुनवाई, एडीआर ने दायर की है याचिका

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को एक गैर सरकारी संगठन एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स की अर्जी पर चुनाव आयोग से जवाब मांगा है।

इस अर्जी में मतदान के कुछ दिनों बाद फाइनल वोटिंग पर्सेंट में हुई बढ़ोतरी का हवाला देते हुए इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों (ईवीएम) के संभावित रिप्लेसमेंट की आशंका जताई गई है।

सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की पीठ ने चुनाव आयोग को 24 मई तक एडीआर की अर्जी पर अपना जवाब दाखिल करने का आदेश दिया है। इस याचिका पर सोमवार से शुरू हो रहे कोर्ट के ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान वैकेशन बेंच सुनवाई करेगी। हालांकि, एडीआर की याचिका पर चुनाव आयोग के वकील ने सवाल उठाए थे।

इस पर कोर्ट ने कहा कि अगर जरूरत पड़ी तो हम मामले की सुनवाई के लिए पूरी रात बैठेंगे। एडीआर ने अपनी याचिका में सुप्रीम कोर्ट से चुनाव आयोग को मतदान खत्म होने के 48 घंटे में वोटिंग के आंकड़े प्रकाशित करने का निर्देश देने की मांग की है। जब पीठ ने पूछा कि वेबसाइट पर मतदान के आंकड़े डालने में क्या कठिनाई है, तो चुनाव आयोग के वकील ने इस पर जवाब दिया। उन्होंने कहा कि इसमें समय लगता है क्योंकि हमें बहुत सारा डेटा एकत्र करना होता है। चीफ जस्टिस ने कहा कि चुनाव आयोग को याचिका पर जवाब देने के लिए कुछ समय दिया जाना चाहिए। बेंच ने इसे चुनाव के छठे चरण से एक दिन पहले 24 मई को वेकेशन बेंच के सामने सुनवाई के लिए लिस्ट किया। इससे पहले 26 अप्रैल को सुप्रीम कोर्ट ने एडीआर की बैलेट पेपर पर वापसी और ईवीएम पर संदेह जताए जाने संबंधी याचिका खारिज कर दी थी। एडीआर की ओर से सुप्रीम कोर्ट में दायर याचिका पर चुनाव आयोग के वकील ने सवाल खड़े किए।

मुंबई में कांग्रेस को घेरते हुए बोले सीएम मोहन

जिस कांग्रेस को बाला साहब चिमटी से नहीं छूना चाहते थे, उसके साथ बैठी है नकली शिवसेना

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने दक्षिण मुंबई में एक चुनावी सभा के पहले पत्रकारों से कहा कि अंग्रेज चले गए लेकिन कांग्रेस छोड़ गए हैं। अंग्रेजों के द्वारा कांग्रेस का जन्म हुआ है। इसलिए फूट डालो और राज करो की नीति पर काम कांग्रेस के लोग करते हैं। वह जैसे हैं वैसे ही लोगों को जोड़कर घमंडिया गठबंधन बनाया है।

चुनावी सभाओं के लिए मुंबई पहुंचे सीएम डॉ यादव ने बाला साहब ठाकरे का जिक्र करते हुए कहा कि जो बाला साहब ठाकरे कहते थे कि वे चिमटी से भी कांग्रेस का समर्थन नहीं छूना चाहते। उन्हीं बाला साहब ठाकरे के नाम पर अब नकली शिवसेना काम कर रही है। शिवसेना के असली नकली होने के सवाल पर उन्होंने कहा कि उद्धव ठाकरे हाईकोर्ट गए, चुनाव आयोग गए और अब सुप्रीम कोर्ट भी गए हैं। हाईकोर्ट और चुनाव आयोग ने जो फैसला दिया उसे स्वीकार नहीं कर रहे। उज्जवल निकम के मामले में कांग्रेस जो टिप्पणी कर रही है, ऐसे में तो इन लोगों को समुद्र में डूब मरना चाहिए। बाला साहब के लोग ऐसे घमंडिया लोगों को साथ लेकर चल रहे हैं। बाला साहब की आत्मा दुखी हो रही होगी। उन्होंने कहा कि देश बड़ा होता है, देश के विचार बड़े होते हैं।

सांस्कृतिक पुनर्जागरण का दौर चल रहा

सीएम यादव ने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी की सरकार बनने के बाद देश में सांस्कृतिक पुनर्जागरण का दौर चल रहा है। अयोध्या में 500 साल पहले जो मंदिर तोड़ा गया वह सम्राट विक्रमादित्य ने बनवाया है। उज्जैन और विक्रमादित्य के साथ अयोध्या का आपस में संपर्क है। उन्होंने कहा कि देवस्थानों के उत्थान होने से कांग्रेस को कष्ट हो रहा है। कांग्रेस के लोग राम सेतु से लेकर राम तक को मानने से इनकार करते रहे है। इसी कारण राम मंदिर बना तो वहां जा नहीं रहे और वहां खड़े होकर फोटो नहीं खिंचवाना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि उज्जैन के सारे मंदिर 1235 में ध्वस्त हुए थे जो बाद में तेजी से सुधारे गए हैं। उन्होंने कहा कि अमेठी में पूरा गांधी खानदान चुनाव लड़ता रहा और ये कहते हैं कि यहां 12 साल में विकास हुआ है।

कांग्रेस की सरकार ने किए सबसे अधिक संविधान संशोधन

मोदी सरकार द्वारा संविधान में बदलाव को लेकर कांग्रेस के आरोपों पर मोहन यादव ने कहा कि सबसे अधिक संविधान संशोधन कांग्रेस ने किए हैं। कांग्रेस सरकार की सरकार में 17 बार इंदिरा, 11 बार नेहरू और 10 बार राजीव गांधी ने संविधान में संशोधन किया है। ये अपनी सरकार में 1950 के बाद से लगातार संशोधन करते रहे हैं। कांग्रेस के सिर पर इतने सारे पाप है कि गिनाए नहीं जा सकते। यादव ने कहा कि कांग्रेस के लोग बाला साहब के नहीं हुए, वीर सावरकर के नहीं हुए। ये सिर्फ अपने लिए काम करते हैं।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 40 °c
न्यूनतम 36°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 19 मई 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

गृह मंत्री शाह ने एयरपोर्ट पर नेताओं से की चर्चा

पूर्व गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा ने की आगवानी, चुनावी सभा में शामिल होने ललितपुर गए

दतिय (नप्र)। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह दिल्ली से शनिवार सुबह 11.40 पर प्लेन से दतिया एयरपोर्ट पहुंचे। एयरपोर्ट पर उनकी अगुवानी प्रदेश के पूर्व गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा की। वे कुछ देर एयरपोर्ट पर रुके और भाजपा कार्यकर्ताओं से मुलाकात की। यहां से वे हेलिकॉप्टर से ललितपुर के लिए रवाना हुए। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के आने की सूचना मिलते ही एयरपोर्ट पर सुरक्षा व्यवस्था टाइट कर दी गई थी। शाह ललितपुर में झांसी ललितपुर लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी अनुराग शर्मा के समर्थन में आम सभा करेंगे। आमसभा को संबोधित करने के बाद वे हेलिकॉप्टर से बांदा के लिए रवाना होंगे। बांदा से वह कार्यक्रम में शामिल होने के बाद अमेठी के लिए उड़ान भरेंगे।

भिंड में टायर फटने से कार पलटी, महिला की मौत, 5 बच्चों समेत 6 घायल

भिंड (नप्र)। भिंड के बरोही थाना क्षेत्र में हाइवे पर टायर फटने से कार अनियंत्रित होकर पलट गई। हादसे में एक महिला की मौत हो गई, जबकि 6 से ज्यादा लोग घायल हो गए। घायलों में 5 बच्चे शामिल हैं। इन्हें ग्वालियर रेफर किया गया है। ग्वालियर के पिपरौआ गांव का रहने वाला परिवार भिंड में रौन के नजदीक बधेली बहादुरपुरा पर स्थित कालिका माता पूजन के लिए आ रहा था। मेहगांव से होते हुए कार बरोही थाना क्षेत्र में पहुंची, तभी गाड़ी का अचानक टायर फट गया। वहां मौजूद रहागीरों ने पुलिस को सूचना दी।

डिंडौरी में बारातियों से भरी पिकअप पलटी

डिंडौरी (नप्र)। डिंडौरी जिले में शनिवार को बारातियों से भरा पिकअप वाहन पलट गया। नवविवाहिता की मौत हो गई। 30 लोग घायल हैं। हादसा चांदरानीबर गांव में दोपहर करीब 1:30 बजे हुआ। घायलों को इलाज के लिए समनापुर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। 6 लोगों को जिला अस्पताल रेफर किया गया है।

बद्रीनाथ से लौट रहे श्रद्धालुओं की जीप पलटी, 2 महिलाओं की मौत

शाजापुर (नप्र)। शाजापुर में एक जीप पलट गई और खंती में जा गिरी। हादसे में दो महिलाओं की मौत हो गई। 6 लोग घायल हैं। एक महिला और पुरुष गंभीर घायल हैं, जिन्हें इंदौर रेफर किया है। जीप में कुल 11 लोग सवार थे। सभी बद्रीनाथ के दर्शन कर लौट रहे थे। सुनेरा थाना प्रभारी गोपाल निंगवाल ने बताया, शनिवार सुबह जिले के पनवाड़ी गांव के पास श्रद्धालुओं से भरी जीप पलट गई थी। सभी श्रद्धालु खरगोन के कसरावद के पास सिंनंगुण गांव के रहने वाले हैं। हादसा को गाय को बचाने के चक्कर हुआ था। मृत महिलाओं के नाम कमलाबाई (50) और जानकीबाई (40) हैं।

एक्सपायरी डेट की दवाएं नष्ट करने का मामला

भोपाल (नप्र)। जेपी अस्पताल में एक्सपायरी डेट की दवाएं नष्ट करने के मामले में शुक्रवार को हेल्थ कार्पोरेशन से टीम जांच के लिए पहुंची। टीम ने यहां 2021-22 से 2024-25 में खरीदी गई सभी तरह की दवाओं का रिकॉर्ड खंगाला। दवा वितरण के ऑनलाइन रिकॉर्ड भी मांगे गए। इस दौरान खुलासा हुआ कि आराध्या नाम की फर्म से 6 लाख रुपए की खरीदी होना सामने आया है। इसका रजिस्ट्रेशन हेल्थ कार्पोरेशन में नहीं है। इधर, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. प्रभाकर तिवारी ने सिविल सर्जन डॉ. राकेश श्रीवास्तव को नोटिस जारी किया है। इसमें उन्होंने 2021 से अब तक हुई दवा खरीदी की जानकारी मांगी है। वहीं क्रय आदेश, वितरण अभिलेख के दस्तावेज भी 23 मई तक उपलब्ध कराने के लिए कहा है।

चारधाम यात्रा

अब पुलिस चैक पोस्ट पर ही भक्तजन होंगे 'स्टॉप'

यात्रा के लिए अनिवार्य हुआ ऑनलाइन-ऑफलाइन रजिस्ट्रेशन

देहरादून (एजेंसी)। चारधाम यात्रा पर आने वाले तीर्थ यात्रियों के लिए बड़ा अपडेट सामने आया है। रजिस्ट्रेशन के बिना किसी भी भी भक्तजन को यात्रा करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। दूसरी ओर, पुलिस-प्रशासन की ओर से यात्रा पर जाने वाले तीर्थ यात्रियों के रजिस्ट्रेशन चैक करने के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। विदित हो कि 10 मई से शुरू चारधाम यात्रा में तीर्थ यात्रियों की भारी भीड़ देखने को मिल रही है।

चारधाम यात्रा के दौरान वाहनों की भीड़ को कम करने के लिए हरिद्वार में भी पहली बार रजिस्ट्रेशन चेक किए जाएंगे। रजिस्ट्रेशन नहीं होने वाले वाहनों को वापस लौटाया जाएगा। इसके लिए पुलिस की ओर से तीन चेक पोस्ट बनाए जा रहे हैं। इनमें पहला चेक पोस्ट नारसन, दूसरा पंतद्वीप और तीसरा चेक पोस्ट सप्तऋषि पर बनाया जाएगा। इसके अलावा नेपाली फार्म में भी हरिद्वार के 25 पुलिसकर्मियों की ड्यूटी लगा दी गई है। जो बिना वजह चारधाम यात्रा मार्ग पर जाने वाले वाहनों को वापस भेजेंगे। हरिद्वार डीएम धीराज सिंह गर्ब्याल, डीएम देहरादून सोनिका, एसएसपी हरिद्वार प्रमेंद्र डोभाल और एसएसपी देहरादून अजय सिंह ने तीन पानी हरिद्वार रोड (नेपाली फार्म हाउस) पर बनाए गए स्टॉपेज केंद्र का भौतिक रूप से निरीक्षण किया। इसके साथ ही अधीनस्थों को दिशा निर्देश दिए। हरिद्वार से चारों धामों के लिए जाने वाला ट्रैफिक हरिद्वार से गुजरने के बाद देहरादून स्थित नेपाली फार्म पर भी वाहनों को चेक किया जाएगा। पंजीकृत यात्री वाहनों को ही आगे भेजा जाएगा। इससे चार धाम यात्रा के दौरान पहाड़ी क्षेत्रों में लगने वाले जाम से निजात मिलेगी जिससे चार धाम यात्रा सरल और सुगम्य होगी। विदित हो कि यात्रा रूट पर तीर्थ यात्रियों की भारी भीड़ देखने को मिल रही है। रायवाला स्थित तीन पानी पुलिया पर बने चारधाम यात्री स्टॉपेज सेंटर का शुक्रवार को डीएम देहरादून सोनिका और हरिद्वार डीएम धीराज गर्ब्याल ने निरीक्षण किया।

47 डिग्री तक पहुंचा तापमान, 9 राज्यों में चलेगी हीटवेव

5 दिनों के लिए अलर्ट जारी, केरल-तमिलनाडु में भारी बारिश की चेतावनी

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में गर्मी का असर तेज हो गया है। मौसम विभाग ने 5 दिन तक दिल्ली समेत 9 राज्यों में हीटवेव का अलर्ट जारी किया है। इनमें राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, बिहार और पश्चिम बंगाल शामिल हैं। इन राज्यों में तापमान में भी लगातार बढ़ोतरी हो रही है। शुक्रवार को इन राज्यों के कई शहरों में तापमान 43 से 46 डिग्री के बीच रिकॉर्ड किया गया। सबसे ज्यादा उत्तर प्रदेश के आगरा में पारा 46.9 डिग्री पहुंचा। इसके अलावा ओडिशा, झारखंड, गोवा, असम और त्रिपुरा में आज उमसभरी गर्मी का अनुमान जारी किया गया है। उधर, दक्षिण भारत के राज्यों में तेज बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विभाग के मुताबिक, आज से 5 दिन तक तमिलनाडु, केरल और पुडुचेरी में भारी बारिश का दौर रहेगा। वहीं, कर्नाटक में दो दिन बाद यानी 20 मई से तेज बारिश की संभावना बनेगी। तमिलनाडु में शुक्रवार को भी तेज बारिश हुई। इससे कई इलाकों में बाढ़ जैसे हालत बन गए। तमिलनाडु की एसडीआरएफ टीम ने बाढ़ की स्थिति से निपटने के लिए तैयारी शुरू कर दी है। टीम शुक्रवार देर रात ही चेन्नई से तिरुनेलवेली पहुंच गई है। जिले के निचले इलाकों में भारी बारिश से निपटने की तैयारी कर रही है। आईएमडी ने 19 से 21 मई के बीच केरल के मलप्पुरम और वायनाड जिलों में ऑरेंज अलर्ट और अन्य आठ जिलों में बारिश का यलो अलर्ट जारी किया।

इजरायल को गोला-बारूद देकर 'पुराना कर्ज' उतार रहा था भारत

- स्पेन ने दिया झटका, भारत के एक शिप को आगे बढ़ने की नहीं दी इजाजत

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत से इजरायल के लिए रवाना हुए एक डेनिश फ्लैग्ड शिप को स्पेन ने अपने पोर्ट पर रोकने की इजाजत नहीं दी। इस शिप में लगभग 27 टन गोला-बारूद ले जाया जा रहा था। स्पेन के विदेश मंत्री जोस मैनुएल अल्बेयर्स ने कहा कि पहली बार है जब उनके देश ने इस तरह का कदम उठाया है। स्पेन की मीडिया

के मुताबिक सरकार ने मैरियाने डेनिका नाम की शिप को इजाजत नहीं दी। चेन्नई से निकला यह शिप हाइफा के लिए रवाना हुआ था। इसमें 26.8 टन गोला-बारूद लादा गया था। भारतीय कंपनी सिद्धार्थ लॉजिस्टिक ने इसे इजरायल कार्गो लॉजिस्टिक के लिए भेजा था। पहली बार है जब स्पेन ने इजरायल के लिए गोला-बारूद के किसी शिप को रोका है। विदे मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जैसवाल ने कहा कि भारत को पता चला है कि एक शिव को स्पेन के पोर्ट पर रुकने की इजाजत नहीं मिली है।

बीईओ के बाबू ने किया 1.32 करोड़ का गबन

पत्नी-बहन, दोस्तों-रिश्तेदारों के खातों में ट्रांसफर किए रुपए ; मृत सहकर्मी का पैसा खाया

छिंदवाड़ा (नप्र)। छिंदवाड़ा में जुन्नारदेव शिक्षा अधिकारी के कार्यालय में 1 करोड़ 32 लाख रुपए का गबन हुआ है। फाइनेंस डिपार्टमेंट (जबलपुर) टीम ने यह गड़बड़ी पकड़ी है। टीम 10 दिन से इसकी जांच में जुटी हुई थी। टीम ने बैंक, ट्रेजरी और सॉफ्टवेयर के रिकॉर्ड देखे, तब जाकर मामला खुला।

तृतीय श्रेणी बाबू तौसीफ खान ने मृत और रिटायर कर्मचारियों का जीआईएस (समूह बीमा योजना) व पेंशन की राशि पत्नी, बहन, रिश्तेदारों, दोस्तों और खुद के बैंक खातों में डाल दी। आरोपी ने कोरोना में मृत कर्मचारी तक का पैसा नहीं छोड़ा। 2018 से अब तक गबन होता रहा।

जुन्नारेदव के तत्कालीन ब्लॉक एजुकेशन ऑफिसर (बीईओ) एमआई खान के कार्यकाल में यह गड़बड़ी हुई है। खान वर्तमान में अमरवाड़ा के बटकाखापा में व्याख्याता हैं। 2020 में इनको तत्कालीन कलेक्टर सौरभ सुमन ने अतिथि शिक्षक की नियुक्ति में अनियमितता पर बीईओ के पद से हटा दिया था।

तत्कालीन बीईओ की लॉगिन आईडी इस्तेमाल हुई, एफआईआर तय- बाबू तौसीफ ने अपनी करतूतों में एमआई खान की लॉगिन आईडी इस्तेमाल की है। जांच टीम एमआई खान को भी आरोपी मानकर चल रही है। दोनों पर एफआईआर होना तय है। फाइनेंस डिपार्टमेंट के अपर संचालक रोहित सिंह कौशल

ने बताया, हमें गड़बड़ी की शिकायत मिली थी। 21 बैंक खातों की जांच की, 12 में वित्तीय गड़बड़ी मिली। फाइनल रिपोर्ट तैयार की जा रही है। इसे जबलपुर संभाग कमिश्नर और वित्तीय विभाग भोपाल मुख्यालय भेजा जाएगा। तौसीफ खान ने 31 लाख 30 हजार रुपए जमा कराए।

टीम 10 दिन से जांच कर रही थी। ब्लॉक एजुकेशन ऑफिस के बैंक, ट्रेजरी और सॉफ्टवेयर के रिकॉर्ड देखे, तब जाकर 1.32 करोड़ रुपए का गबन सामने आया।

कोरोना में मृत साथ कर्मचारी को भी नहीं बख्शा

बीईओ कार्यालय में पदस्थ पुरुषोत्तम विश्वकर्मा की कोविड में मौत हो गई थी। उनके नाम से शोएब खान के बैंक खाते में 1 लाख 82 हजार और इमरान खान के खाते में 1 लाख 37 हजार रुपए ट्रांसफर किए गए।

किसके खाते में लगभग कितनी राशि ट्रांसफर की गई

शबीना (तौसीफ की पत्नी)- 7 लाख रुपए
साहिबा (तौसीफ की बहन)- 65000 रुपए
शोएब अहमद खान-27 लाख रुपए
जिया अहमद खान- 24 लाख रुपए
फराज कुरैशी- 18 लाख रुपए
मोहसिन खान- 4 लाख रुपए
अजय कुमार अजय कुमार आम्रवंशी- 7 लाख रुपए
इमरान खान- 5 लाख रुपए
सोहेल खान-4 लाख रुपए
इम्तियाज खान- 45 हजार रुपए
विकास धुर्वे-33 हजार रुपए
मुकुल साहू-30 हजार रुपए
रोहित धुर्वे-23 हजार रुपए
(बाकी के लोग तौसीफ के रिश्तेदार और दोस्त बताए जा रहे हैं।)

ट्रेजरी डिपार्टमेंट जांच कर दे चुका था क्लीन चिट

छिंदवाड़ा जिले में अब तक चार विकासखंडों में वित्तीय अनियमितता के मामले सामने आ चुके हैं। छिंदवाड़ा, मोहखेड़ और तामिया तीन विकासखंड में संबंधित बीईओ और भ्रष्ट बाबुओं के खिलाफ एफआईआर हो चुकी है। अब जुन्नारदेव में भी ऐसी ही अनियमितता सामने आई है। ऐसे में जिला कोषालय विभाग की भूमिका सवाल खड़े हो रहे हैं।

दरअसल, वित्तीय लेनदेन और बिलों का भुगतान जिला कोषालय (ट्रेजरी डिपार्टमेंट) के जरिए ही होता है। जुन्नारदेव में कोषालय विभाग की टीम पहले ही वित्तीय लेनदेन की जांच कर क्लीन चिट दे चुकी थी।

बच्चों के आत्मघाती कदम से कब मिलेगी मुक्ति

दृष्टिकोण

डॉ . सूर्यकांत मिश्रा

छात्र - छात्राओं में बढ़ती हुई आत्मघात की प्रवृत्ति सामयिक चिंता का विषय है । विगत कुछ वर्षों में विद्यार्थियों द्वारा आत्मघात की संख्या में क्रमशः हो रही वृद्धि निश्चित ही मानवीय समाज के लिए अलार्मिंग मानी जानी चाहिए ! आत्मघात की बढ़ती प्रवृत्ति के पीछे कोई एक कारण उत्तरदाई नहीं है ! विभिन्न तरह की अवसाद की स्थिति के चलते आत्मघातों की संख्या के आधार पर उनके निराकरण के प्रयास बुद्धिजीवी वर्ग को करने होंगे। प्रतिदिन समाचार पत्रों में प्रकाशित होने वाली खबरों के आधार पर कहा जा सकता है कि आत्मघात के कारणों में व्यक्तिगत , पारिवारिक , शैक्षणिक , सामाजिक , शासकीय ,नीतिगत तथा आर्थिक कारण अपना नकारात्मक प्रभाव दिखा रहे हैं ! पृथक - पृथक कारणों से स्वयं को माता - पिता अथवा वर्तमान समय की अपेक्षाओं के अनुसार सफल न होने के भय से कुंठा तथा हीन भावना अंततोगत्वा विद्यार्थियों के दिलों - दिमाग में अवसाद के रूप में गहरी पैठ बना रही हैं ! खुद पर विश्वास न रखने के कारण अंततः मानवीय समाज को अपने बेटे - बेटियों को खोना पड़ रहा है ! अभी छत्तीसगढ़ बोर्ड परीक्षा के परिणाम घोषित होने के उपरांत आत्मघात की कुछ घटनाओं ने मुझे झकझोर दिया है ! मैने अपने जीवन के लगभग चार दशक अध्यापन कार्य में गुजारे हैं । इस तरह की घटनाएं पहले नगण्य थीं , किंतु अब दिल - दहलाने तक पहुंच गई हैं !

विद्यार्थियों में बढ़ रही आत्महत्या की घटनाओं के पीछे मैंने जो अनुभव किया उसमें सबसे पहले पढ़ाई का लक्ष्य पूरा न हो पाने के कारण जागृत असफलता का भाव , अपने सह - पाठियों से प्रतिस्पर्धा में पीछे रह जाना , मुझे दिखाई पड़ रहा है। साथ ही किसी विषय विशेष में स्वयं को कमजोर पाने पर अवचेतन में निर्मित भय और हीनता का भाव दुःखद परिणाम तक ले जा रहा है ! हम यह जानते हैं कि विद्यार्थियों का मन अत्यंत कोमल होता है । साथ ही संवेदनशीलता भी अत्यधिक होती है । उनके किसी कार्य के प्रति , प्रतिकूल टिप्पणी या डांट - फटकार से उत्पन्न तनाव उन्हें अपराध बोध की जंजीरों में जकड़ लेता है । इस संदर्भ में एक कारक इस रूप में भी सामने आता रहा है - कि समृद्ध परिवार द्वारा अपने बच्चों को जरूरत से ज्यादा सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है ! वहीं आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थी अभावों में रहते हैं ! इन दोनो ही स्थितियों में उनका शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ विकास नहीं हो पा रहा है ! इसी कारण वैचारिक असंतुलन की स्थिति निर्मित हो रही है । दूसरी बड़ी बात यह भी है कि विद्यार्थी अपनी क्षमताओं का आंकलन नहीं कर पा रहे हैं ! यही कारण है कि उनके अंदर स्व-निर्णय की क्षमता का विकास नहीं हो पा रहा है । यह भी देखने में आ रहा है कि विद्यार्थियों में बिना अपेक्षित प्रयास , परिश्रम तथा योग्यता के शीघ्र ही सफल होने की महत्वाकांक्षा , सफलता न मिलने पर नैराश्य की स्थिति पैदा कर रही है !

वर्तमान के भौतिकवादी परिवेश में विकसित नकारात्मक सोच के कारण कठिनाई एवं समस्याओं का सामना करने का साहस भी विद्यार्थियों में घर कर गया है । इसके अलावा धैर्य तथा सहनशीलता की कमी के कारण परिस्थितियों से सामंजस न बैठा पाना भी आत्मघाती हो रहा है । सूचना एवं संचार क्रांति के इस युग में युवा पीढ़ी की सोशल मीडिया में अत्यधिक सक्रियता और इंटरनेट आदि के विवेक हीन प्रयोग के कारण अपेक्षित गंभीरता का अभाव परिलक्षित है । एक सच्चाई जिसे लिखना मेरे लिए उचित प्रतीत नहीं हो रहा है , किंतु किशोरावस्था को सचेत करने कहना पड़ रहा है कि युवा विद्यार्थियों में अध्ययन के अतिरिक्त प्रणय- प्रसंगों में आबद्धता इस कदर भूत बनकर सवार है कि उन्हें इसके अलावा सब बेकार नजर आता है । प्रणय- प्रसंग में असफल हो जाने पर उद्वेलित होकर उनके द्वारा आत्मघाती कदम उठाए जा रहे हैं ! जहां तक मैं समझता हूं इस मामले में 'गुड पेरेंटिंग ' अच्छे परिणाम दे सकती है । वर्तमान भाग - दौड़ वाली जिंदगी में माता - पिता दोनो सेवारत होने के कारण घर पर बच्चों के साथ समय नही बिता पा रहे हैं । उनके अंतर्मन में चल रही द्वंदता को दूर करने की पालकों की कमी भी इसके लिए जवाबदार ठहराई जा सकती है । इसे नकारा नहीं जा सकता है कि हमारी सामाजिक संरचना में परिवार एक महत्वपूर्ण इकाई है । संयुक्त परिवारों का विघटन तथा एकल परिवारों का प्रचलन और इससे उत्पन्न वातावरण का प्रभाव बच्चों पर नकारात्मक रूप से असर दिखा रहा है ! मैं स्पष्ट रूप से कह सकता हूं कि माता - पिता एवं संतान के बीच संवाद हीनता के कारण बच्चा अपने मन की बात या समस्या अन्य के साथ साझा नहीं कर पा रहा है ! यह एक बड़ा कारण है जो बच्चों को गलत मार्ग में जाने विवश कर रहा हैं !

बच्चों में बढ़ रहे आत्मघाती विचार के लिए काफी हद तक पालक जिम्मेदार ठहराए जा सकते हैं ! बच्चों की रुचि एवं क्षमता के अनुरूप कैरियर चुनने की स्वतंत्रता न मिलना भी अहम कारण है ! परिजनों द्वारा अपने नजरिए से पाठ्यक्रम - विषय का चयन किया जा रहा है । रुचि के विपरीत अभिभावकों के दबाव के कारण बच्चों में अंतर्निहित प्रतिभा को प्रकट करने का असर समाप्त किया जा रहा है ! यही कारण है कि दबाव पूर्वक लिए गए विषय में असफल होने पर उनके अंदर कुंठित भावना पैदा हो रही है ! साथ ही बच्चों की दिनचर्या पर अभिभावकों का ध्यान लगभग शून्य है ! अव्यवस्थित दिनचर्या बच्चों के प्रदर्शन को प्रभावित कर रही है ! एक और कारण जो मुझे नजर आता है , वह है पालकों द्वारा बच्चे की इच्छा के बगैर अध्ययन - कोचिंग हेतु घर से दूर भेज देना ! इस स्थिति के चलते बच्चों में ' होम सिकनेस' की समस्या पैदा हो रही है ! वे माता - पिता से डर के कारण अपने मन की बात उनसे नहीं कह पाते हैं , और न ही वापस आ पाते हैं ! इसका नकारात्मक परिणाम अकेलेपन के कारण अवसाद के रूप में सामने आ रहा है ! आज के अभिभावक के मन में यह विचार स्थाई रूप से बैठ चुका है कि उन्होंने अपने जीवन में जो प्राप्त नहीं कर पाया , वे अपने उन सपनों को बच्चों से पूरा कराना चाहते हैं ! इसी तरह की थोपी गई इच्छा के कारण बच्चे तनाव में आकर कुंठाग्रस्त हो रहे हैं !

आत्मघाती निर्णय की जब हम बात कर रहे हैं तब राजस्थान के कोटा शहर की बात न आए , यह नहीं हो सकता । मेडिकल और इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने के उद्देश्य से कोटा में कोचिंग करने वाले प्रतिभावनों की बात करूं तो पैरों के नीचे धरती हिलती नजर आती है ! वर्ष 2023 के शुरुआती महीनों में ही कोटा में लगभग 20 छात्रों ने आत्महत्या कर ली ! हम यदि विश्व स्तर के मामलों को छोड़कर केवल भारतवर्ष की बात करें तो एनसीआरबी की रिपोर्ट बताती है कि 2021 में भारतवर्ष में 13 हजार से अधिक बच्चों ने मौत को गले लगा लिया ! मैं यदि इन आंकड़ों के आधार पर प्रतिदिन की मौत का औसत आंकलन करूं तो यह 35 छात्र के रूप में प्राप्त होता है , अर्थात प्रतिदिन एक से अधिक बच्चे ने हमें विचलित किया है ! माता - पिता की थोपी गई इच्छाशक्ति के चलते शायद हमें जल्द ही इन आत्मघाती विचारों से मुक्ति नहीं मिलने वाली है।

परिक्रमा

चुनावी समर में आमने-सामने एनडीए और महागठबंधन

अरुण पटेल

लेखक सुबह सवेरे के प्रबंध संपादक हैं।
संपर्क-
09425010804
07999673990

लोकसभा चुनाव के पांचवें चरण के मतदान के लिए अब केवल एक दिन शेष है और 20 मई को 6 राज्यों तथा दो केंद्र शासित प्रदेशों की 49 लोकसभा सीटों पर 695 उम्मीदवारों का भाग्य भी इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीनों में कैद हो जायेगा, उसके बाद केवल दो चरण और बाकी रहेंगे तथा 4 जून 2024 का दिन ढलते-ढलते यह साफ हो जायेगा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तीसरी पारी खेलेंगे या फिर कोई नया चेहरा सामने आयेगा। इन दिनों भाजपा की अगुवाई वाले एनडीए और कांग्रेस के अगुवाई वाले इंडिया महागठबंधन के बीच अधिकांश लोकसभा क्षेत्रों में सीधा चुनावी मुकाबला हो रहा है और कहीं-कहीं इंडिया गठबंधन के सहयोगी आपस में भी भिड़ रहे हैं। दोनों गठबंधनों के नेता एक-दूसरे पर आग उगलती जुबान में शाब्दिक हमला कर रहे हैं और यह हर दिन और अधिक तीखा होते जाने की संभावना को नकारा नहीं जा सकता क्योंकि इसमें कोई किसी से पीछे नहीं रहना चाहता।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कह रहे हैं कि यदि केन्द्र में कांग्रेस की सरकार बनी तो वह राम को फिर से टेंट में भेज कर राम मंदिर पर बुलडोजर चलवा देगी वहीं दूसरी ओर राहुल गांधी का कहना है कि मोदी ने अपनी हार मान ली है और उनका गुड बॉय हो गया। भले ही इंडिया गठबंधन या कांग्रेस ने राहुल गांधी को बतौर नेता प्रोजेक्ट न किया हो लेकिन प्रधानमंत्री और भाजपा नेता इस चुनावी लड़ाई को नरेन्द्र मोदी बनाम राहुल गांधी बनाना चाहते हैं इसलिए उनके निशाने पर कांग्रेस कम राहुल गांधी अधिक हैं। सबसे अधिक 80 लोकसभा सीटों वाले उत्तरप्रदेश में असली चुनावी घमासान हो रहा है क्योंकि महागठबंधन भाजपा से अधिक से अधिक सीटें छीनने के प्रयासों में लगा हुआ है जबकि भाजपा को अपनी समूची ताकत 2019 के लोकसभा चुनाव में जीती गई सीटों को बचाने में लगी हुई है। क्योंकि यदि उत्तरप्रदेश में भाजपा की सीटों की संख्या में कमी होती है तो उसकी भरपाई वह कहां से करेगी यह सवाल विपक्षी नेताओं द्वारा उठाया जा रहा है। भाजपा 400 के आसपास सीटें लाने के लिए जी-जान से भिड़ी हुई है तो इंडिया महागठबंधन को भरोसा है कि सरकार उसकी ही बनेगी। आम आदमी पार्टी सुप्रीमो व दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल दावा कर रहे हैं कि इस बार केंद्र में इंडिया गठबंधन की सरकार बनने जा रही है। कांग्रेस और समाजवादी पार्टी पर निशाना साधते हुए उत्तरप्रदेश में बाराबंकी और हमीरपुर की चुनावी सभा में प्रधानमंत्री मोदी ने दावा किया कि यदि ये सत्ता में आये तो राम मंदिर पर बुलडोजर चलवा देंगे। उनका यह भी कहना था कि इनके लिए परिवार और सत्ता ही सब कुछ है। उन्होंने सलाह दी कि ये पार्टियां उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से इस बात की शिक्षा लें कि बुलडोजर कहां चलना चाहिये। मतदाताओं को सावधान करते हुए मोदी कहते हैं कि ये सत्ता में आये तो आपकी प्रापर्टी का हिस्सा उन्हें सौंप देंगे जो इनके लिए वोट जिहाद करते हैं। मोदी का कहना था कि कांग्रेसी रायबरेली में कह रहे हैं कि वे यहां प्रधानमंत्री को चुन रहे है, ये दिन में सपने देखने जैसी बात है। यह सुनते ही समाजवादी शहजादे का तो दिल ही टूट गया, बस आंसू नहीं निकले पर दिल के सारे अरमॉं बह गये। इस प्रकार मोदी ने राहुल गांधी और अखिलेश यादव की जोड़ी पर एक साथ निशाना साधा।

वहीं दूसरी ओर राहुल गांधी ने रायबरेली और अमेठी में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर सीधा निशाना साधते हुए कहा कि मोदी ने हार मान ली है, उनका गुडबॉय हो चुका है और अब 4 जून के बाद मोदी प्रधानमंत्री नहीं रहेंगे। उन्होंने कहा कि महंगाई, बेरोजगारी तथा सबको बराबरी का हक देना ही देश के मुद्दे हैं लेकिन महंगाई पर पूछो तो कहते हैं कि अंबानी परिवार की शादी देखो। कोरोना आया तो कहते हैं कि थाली बजाओ, इंडिया गठबंधन की सरकार बनने पर हर महीने 10 किलो राशन सरकार देगी। अखिलेश यादव ने भी मोदी पर निशाना साधते हुए कहा कि वो जो कहते थे कि न खायेंगे न खाने देंगे और वे सब डकार गये, अब जनता कह रही है कि इन्हें हटायेंगे। लंबे समय तक रायबरेली का प्रतिनिधित्व करने वाली सोनिया गांधी ने रायबरेली की सभा में बड़े भावुक व मार्मिक अंदाज में वहां के लोगों से कहा कि मैं अपना बेटा आपको सौंप रही हूं, रायबरेली से हमारे परिवार का नाता गंगा के समान पवित्र रहा है। राहुल गांधी आपको निराश नहीं करेंगे।

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने साफ किया है कि वह इंडिया गठबंधन का हिस्सा हैं तथा उसमें शामिल हैं, केन्द्र में कांग्रेस के नेतृत्व में बनने वाली सरकार का समर्थन करेंगी। इसके साथ ही उन्होंने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि उसे प. बंगाल में चुनावी सफलता नहीं मिलने वाली और वह अपनी पिछले चुनाव की परफारमेंस नहीं दोहरा पायेगी उससे नीचे ही जायेगी। चूंकि प. बंगाल में इंडिया गठबंधन के दल आपस में एक-दूसरे के खिलाफ चुनाव लड़ रहे हैं और ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस सभी सीटों पर चुनाव लड़ रही है तो वहीं कांग्रेस और वाममोर्चा एक गठबंधन बनाकर चुनाव लड़ रहे हैं। इस पर सफाई देते हुए ममता कहती हैं कि बंगाल में नहीं लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर इंडिया गठबंधन में हैं। अपने एक दिन पूर्व के इस बयान पर कि इंडिया गठबंधन की सरकार बनने पर बाहर से समर्थन देंगी, पर काफी विवाद होने के बाद ममता ने कहा कि अखिल भारतीय स्तर पर हमने विपक्षी महागठबंधन भारत यानी इंडिया का गठन किया है और हम गठबंधन में रहेंगे। मैंने वह गठबंधन बनाया है और मैं गठबंधन में रहूंगी। बंगाल में कोई कांग्रेस नहीं, यहां कोई सीपीएम नहीं लेकिन अखिल भारतीय स्तर पर हम गठबंधन में रहेंगे, इसमें गलतफहमी की कोई गुंजाइश नहीं है।

और यह भी

महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री और महाविकास अघाड़ी के नेता उद्धव ठाकरे जिनकी अगुवाई में महाराष्ट्र में लोकसभा चुनाव लड़ा जा रहा है ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर तंज कसते हुए कहा कि वह नई पीढ़ी के लिए जगह नहीं बना रहे हैं। नई पीढ़ी के लिए जगह बनाने की बजाए वे तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने को उत्सुक हैं। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जो इन दिनों उत्तरप्रदेश के यादव बहुल इलाकों में भाजपा प्रत्याशियों का चुनाव प्रचार कर रहे हैं, उन्होंने कांग्रेस व समाजवादी पार्टी पर निशाना साधते हुए कहा कि ये लोग कुछ लोगों को अपने वोट का गुलाम बनाकर रखना चाहते हैं, इनकी मानसिकता ही ऐसी है, पहले अंग्रेजों ने ऐसा किया था अब कांग्रेस भी ऐसा कर रही है वह एक ऐसी पूंछ है जो सीधी नहीं हो रही। उन्होंने कहा कि मुस्लिम वर्ग के लोग हमारे साथ हैं इसलिए कांग्रेसियों व समाजवादियों के पेट में दर्द हो रहा है।

पुलिस को देखकर भाग रहा था आठवीं का स्टूडेंट

कंधे पर टंगी थी 12 बोर की बंदूक, तीन कारतूस भी जब्त

इंदौर (नप्र)। इंदौर की छोटी ग्वालटोली ने एक आठवीं के स्टूडेंट को पकड़ा है। आरोपी के कंधे पर 12 बोर की बंदूक टंगी हुई थी। पुलिस को देखकर वह भाग रहा था। उसके पहले ही उसे दबोच लिया गया। छोटी ग्वालटोली पुलिस ने हरदा में रहने वाले 17 साल के नाबालिग को पकड़ा है। शुक्रवार रात जब पुलिस चैकिंग कर रही थी तो वह उसके कंधे पर 12 बोर की बंदूक टंगी थी। पुलिसकर्मियों ने उसे रोका तो वह भागने लगा। इसके बाद जवानों ने उसे पकड़ा और पूछताछ की तो वह जवाब नहीं दे पाया। इसके बाद उसे थाने लाकर अफसरों से बात कर आर्म्स एक्ट की धाराओं में केस दर्ज किया गया है। पकड़ाए नाबालिग ने पुलिस को बताया कि वह आठवीं क्लास की पढ़ाई कर रहा है। उसके पास से तीन कारतूस भी मिले हैं। पुलिस बंदूक को लेकर उससे पूछताछ कर रही है।

नशे के सौदागरों पर कार्रवाई को हाईकोर्ट ने सही ठहराया

इंदौर की दो महिला तस्कर सहित तीन भोपाल जेल में ; पहले भी गिरफ्तार हो चुके हैं

इंदौर (नप्र)। नशा बेचने वालों के खिलाफ कमिश्नर दीपक सिंह द्वारा की कार्रवाई को हाई कोर्ट ने सही ठहराया है। कमिश्नर ने पिछले माह एनडीपीएस एक्ट में तस्कर उषा उर्फ काली, पांगू बाई उर्फ सरिता और आमिर खान को 6-6 माह के लिए के लिए केंद्रीय जेल भोपाल में निरुद्ध कराया था। आरोपियों के नाम अपराधी पांगू बाई उर्फ सरिता पति स्व. विनय भूरिया निवासी 121, भील कॉलोनी, उषा उर्फ काली पति रामअवतार वर्मा निवासी- 858, कुम्हारखाड़ी, बाणगंगा, इंदौर आमिर खान पिता समीर खान उर्फ चमलु खान, निवासी प्रतापगढ़ राजस्थान को नशे का व्यापार करने के मामले में निरुद्ध कराया था। यह तीनों कुख्यात अपराधी होकर अवैध मादक पदार्थ तस्करी करने में लिप्त हैं। पहले भी नशे की तस्करी करते पकड़े जाने के बाद फिर करने लगे थे। आरोपी अपने एजेन्ट, बिचौलियों के साथ मिलकर नशे की खरीद-फरोख्त कर अलग-अलग स्थानों पर बेचते थे। इनके खिलाफ विभिन्न थाना क्षेत्र में केस दर्ज हैं।

इंदौर में वकीलों का विरोध प्रदर्शन

इंदौर (नप्र)। इंदौर के न्यायिक इतिहास में पहली बार ग्रीष्मकालीन अवकाश 1 से 30 जून तक घोषित किए जाने के खिलाफ वकील मुखर हो गए। शुक्रवार को जिला एवं सत्र न्यायालय में 550 से ज्यादा वकीलों ने काली व लाल पट्टी बांधकर इस फैसले का विरोध दर्ज कराया। जिन वकीलों ने काला कोट पहना था, उनकी बांह पर लाल पट्टी बांधी गई थी।

वहीं जो वकील सफेद शर्ट पहनकर आए थे, उनकी बांह पर काली पट्टी बांधी गई थी। बार अध्यक्ष सुरेंद्र कुमार वर्मा, उपाध्यक्ष श्रीराम भदौरिया के मुताबिक अब 24 मई को काला दिवस मनाया जाएगा। सदस्य वरुण रावल के मुताबिक सदस्यों को मई में अवकाश की सबसे ज्यादा जरूरत होती है। 15 जून के बाद तेज बारिश का दौर शुरू हो जाता है और ऐसे में उस समय वेकेशन की जरूरत महसूस नहीं होती। इस व्यवस्था को बदला जाना चाहिए।

इंदौर ; खजराना चौराहे में अब जाम की समस्या होगी खत्म

इंदौर (नप्र)। खजराना चौराहे पर बन रहे सिक्सलेन फ्लाय ओवर की एक भुजा जून में शुरू करने को लेकर काम जोरों पर चल रहा है। शुक्रवार को बंगाली चौराहे से खजराना तरफ जा रही भुजा शुरू करने के लिए सॉलिड एप्रोच (ब्रिज पर चढ़ाव और उतार) पक्का करने का काम शुरू हो गया। वहीं डामरीकरण का काम शुक्रवार को एक हिस्से में पूरा हो गया। बताते हैं 4 जून को लोकसभा चुनाव परिणाम आने के बाद इस लेन को शुरू कर दिया जाएगा। इसके बाद खजराना चौराहे पर लगने वाले जाम की समस्या खत्म हो जाएगी। अभी कई बार वाहन चालक पांच-पांच मिनट का सिग्नल होने के बाद भी निकल नहीं पाते। शुक्रवार को इंदौर विकास प्राधिकरण के सीईओ रामप्रकाश अहिरवार ने ब्रिज का निरीक्षण किया। वहीं कॉन्ट्रैक्टर को निर्देश दिए कि तीन शिफ्ट में काम कर इस लेन को मानसून से पहले शुरू कर दिया जाए।

इंदौर में गर्म हवाओं और उमस ने किया बेचैन

दूसरे दिन भी पारा 40 डिग्री के करीब, दोपहर बाद बादल छा गए थे

इंदौर (नप्र)। इंदौर में पिछले दो दिनों से उमस भरी गर्मी से लोगों का हाल बेहाल है। इन दिनों दिन का तापमान 40 डिग्री के करीब है। दिन में गर्म हवाओं और उमस ने लोगों को बेचैन कर दिया है। मौसम आज वैज्ञानिकों ने दोपहर बाद भी बादलों के छाने के साथ बूंदाबांदी हुई। शनिवार को गर्म हवाओं के थपेड़े झुलसा रहे थे।

गुरुवार को दिन का तापमान 39.8 (-1) डिग्री और रात का तापमान 28 (+3) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया था। शुक्रवार को दिन का तापमान 39.9 (-1) और रात का तापमान 26.8 (+2) डिग्री सेल्सियस रहा। इसके पूर्व गुरुवार की रात इस सीजन की सबसे गर्म रात थी। इस बार भले ही दिन में गर्मी काफी है लेकिन मई के 17 दिनों में 11 दिन ऐसे रहे जब दिन का तापमान औसत से भी कम रहा। रात का तापमान 17 दिनों में दो बार औसत से कम रहा।

सीनियर वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन के मुताबिक नार्थ-ईस्ट राजस्थान के ऊपर एक साइक्लोनिक सर्कुलेशन सिस्टम है। वहां से एक ट्रफ लाइन भी गुजर रही है। मध्य प्रदेश में वेस्टर्न डिस्टरबेंस ट्रफ लाइन के साथ एक्टिव है। एक और वेस्टर्न डिस्टरबेंस का असर होगा। इसके चलते कहीं तेज गर्मी है तो कहीं बारिश-आंधी है। इंदौर में एक-दो दिन तापमान में मामूली उतार-चढ़ाव रहेगा। इस दौरान दोपहर बाद बादलों के छाने के साथ कहीं-कहीं बूंदाबादी या हल्की बारिश हो सकती है।

इंदौर में टोल कर्मचारी पर गाड़ी चढ़ाने की कोशिश, बैरिकेड्स तोड़कर निकाल ले गए गाड़ियां

इंदौर (नप्र)। इंदौर-उज्जैन टोल पर मारपीट और विवाद का नया मामला सामने आया है। अब टोल कर्मचारियों पर गाड़ी चढ़ाने की कोशिश की गई। पूरी घटना टोल के सीसीटीवी कैमरे में कैद हुई है। वीडियो में दिख रहा है कि टोल कर्मचारियों को ड्राइवर धमका रहे हैं। टोल टैक्स नहीं देने का भी दावा कर रहे हैं।

बता दें कि टोल वसूली का टेंडर निजी कंपनी को मिलने के बाद कुछ वाहन मालिकों ने टोल सुपरवाइजर को नंबर सहित वाहनों की लिस्ट सौंप दी है। कहा है कि इन गाड़ियों को टोल-फ्री ही रखें। तब यह लिस्ट थाने में देते हुए शिकायत की गई थी लेकिन कार्रवाई नहीं हुई थी। ताजा मामले में भी पुलिस को सीसीटीवी फुटेज सौंपे गए हैं। बाणगंगा टीआई लोकेश भदौरिया का कहना है कि पहले भी हमने थाने बुलवाकर कार्रवाई की थी। कर्मचारियों को कहा है वो एफआईआर दर्ज कराएं। अभी शिकायत आई है कार्रवाई कर रहे हैं। बारोली स्थित इंदौर-उज्जैन टोल का जिम्मा पहले एमपीआरडीसी (मप्र रोड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन) के पास था। मुफ्तखोरी के चलते कॉर्पोरेशन को नुकसान हो रहा था।

टोल-फ्री करने सुपर वाइजर को दी 86 वाहनों की लिस्ट

इस टोल के निजी हाथों में जाने के बाद कथित दबंग लोगों ने 85 कॉमर्शियल वाहनों की लिस्ट सुपरवाइजर को दी। कहा कि हमारी इन गाडियों को टैक्स फ्री रखो। टोल कंपनी ने इससे इनकार कर दिया। कंपनी की तरफ से वाहनों की लिस्ट सहित एक शिकायती आवेदन बाणगंगा थाने में देकर कार्रवाई की मांग की गई। अब तक एक्शन नहीं हुआ है।

पुलिस में शिकायत के बाद कर्मचारियों से होने लगी बदसलूकी

पुलिस को शिकायत के बाद से यहां कर्मचारियों के साथ अभद्रता और बदसलूकी की घटनाएं हो रही हैं। कॉमर्शियल वाहनों के ड्राइवर कर्मचारियों को धमका कर गाड़ी निकाल रहे हैं। अब यहां पर टोल कर्मचारियों पर बिना टोल दिए गाड़ी चढ़ाने की कोशिश की गई। जिसमें सीसीटीवी फुटेज सामने आए हैं। उक्त फुटेज पुलिस को भी सौंपे गए हैं। वही कंपनी के कर्मचारियों ने टोल नहीं देने वाले वाहन ड्राइवर के वीडियो भी बनाए हैं जो धमकी देकर गाड़ी मालिक और कंपनी का नाम बताकर टोल देने से इनकार रहे हैं।

इंदौर में एप्पल कंपनी के डीलर से धोखाधड़ी

महाराष्ट्र की साफ्टवेयर कंपनी ने एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के नाम से किया फर्जीवाड़ा

इंदौर (नप्र)। इंदौर के पलासिया में एप्पल कंपनी के डीलर के साथ धोखाधड़ी हो गई। महाराष्ट्र की साफ्टवेयर कंपनी और एजुकेशनल इंस्टीट्यूट ने 2 करोड़ की धोखाधड़ी की है। इस मामले में पुलिस ने निजी कंपनी के दंपती ओर अन्य लोगो के खिलाफ केस दर्ज किया है। पलासिया पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक रितेश खंडेलवाल (एजिस इंफोटेक प्राइवेट लिमिटेड), निवासी तुलसी चैम्बर्स ओल्ड पलासिया की शिकायत पर महमद लुकमान मखदूम देसाई उनकी पत्नी नुसरत शोएब महमद मखदूम देसाई एच ए इंफ्रा-कान प्राइवेट लिमिटेड आफिस नंबर 204 , सर्वे नंबर 112/3 सिग्रेट हाउस पुलिस स्टेशन के सामने आलंदी रोड येरवडा पुणे, वसीम मोहम्मद पुत्र इशाक शेख, प्रथमेश पुत्र प्रकाश देशमुख, श्रीधरन गोपाल आयंगर, सादिक गुलाम करवंडीकर , रिजवान दस्तगीर करवंडीकर और शोएब महमद मखदूम देसाई के खिलाफ 406, 409, 420, 467, 468, 471 की धाराओं में केस दर्ज किया गया है।

इंस्टीट्यूट आदेश निकला फर्जी

रितेश खंडेलवाल ने पुलिस ने बताया बाम्हदेव दादा माने इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलॉजी का जो डील का आदेश एलएलपी कंपनी द्वारा हमें बताया गया था। वह बाद में पता चला कि फर्जी है। इस संस्थान को माल भेजा ही नहीं गया। वह यहां भेजने की बजाय कहीं और दिया गया। उसका पेमेंट इंदौर की कंपनी को दिया ही नहीं गया। एलएलपी कंपनी ने इसी बीच 41 लाख का माल भी खरीदा। जिसमें कुल माल के बदले 20 लाख रुपए के लगभग ही जमा कराए गए। इस मामले में कंपनी से लगभग 70 लाख रुपए लेना बाकी है। इसके अलावा भी कंपनी की ओर से अलग-अलग फर्म बताते हुए लाखों रुपए का माल खरीदना बताया गया है। रितेश कंपनी से रुपए लेने पुणे भी गए। यहां काफी दिनों तक पेमेंट के लिए सभी लोगों से तकाजा किया। लेकिन उन्होंने पेमेंट नही दिया। बाद में उन्होंने इंदौर पुलिस के वरिष्ठ अफसरों को शिकायत की। इस पर पलासिया पुलिस ने केस दर्ज कर लिया।

इंदौर में दालों के दाम में 250 रुपए तक तेजी

- **5 दिन में नारियल 300 रुपए बोरी महंगा हुआ**

इंदौर (नप्र)। अंतरराष्ट्रीय बुलियन वायदा मार्केट में सप्ताह के अंतिम कारोबारी दिवस शुक्रवार को कॉमेक्स पर सोना 10 डॉलर टूट कर 2387 डॉलर प्रति ओंस पर कारोबार करता देखा गया। हालांकि इसका असर भारतीय बाजारों पर नहीं दिखा। इंदौर में सोना केडबरी गुरुवार के बंद भाव 72900 रुपए प्रति दस ग्राम पर स्थिर रहा। वहीं कॉमेक्स पर चांदी वायदा में सटोरियों की सक्रियता से मजबूती देखी गई। चांदी वायदा ऊपर में 29.80 तक जाने के बाद 29.67 पर कारोबार करता देखा गया। इसके चलते इंदौर में चांदी चौरसा नगद में आंशिक सुधर कर 83650 रुपए प्रति किलो बोली गई।

इधर, नारियल में लोकल के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों की पूछताछ बाजार में सीमित रूप से बनी हुई है, जबकि बाजार में माल की भारी शॉर्टेज होने से पिछले चार-पांच दिनों से कीमतें धीमी गति से लगातार बढ़ रही है। पिछले पांच दिनों में करीब 250-300 रुपए प्रति बोरी की तेजी आ चुकी है। दरअसल, गर्मी का दबाव बढ़ने के कारण नारियल की क्वालिटी जल्दी खराब (पानी सूखने) हो जाती है, जिसके चलते व्यापारी आवश्यकता अनुसार ही माल मंगवा रहे हैं, जबकि बाजार में आवक से अधिक मांग होने से तेजी को सपोर्ट मिल रहा है।

चने की तेजी थमने का नाम नहीं ले रही है। चने में तेजी के साथ-साथ अन्य दलहन के दामों में भी तेजी का वातावरण बनने लगा है। शुक्रवार को चना कांटा 100 रुपए और बढ़कर 6700-6750 विशाल 6500-6550 रुपए प्रति क्विंटल पर पहुंच गए। चने में तेजी के कारण अन्य दलहन में भी मांग का दबाव धीरे-धीरे बढ़ने लगा है। शुक्रवार को मसूर 50-75, तुवर में 100, मूंग में 100 और उड़द में भी 200 रुपए की तेजी दर्ज की गई। दालों में भी अच्छी डिमांड रहने से तुवर दाल में 250, चना दाल में 200, मूंग दाल में 100 और मसूर दाल में 50 रुपए की तेजी रही।

व्यंग्य

डॉ. हरीशकुमार सिंह

नए प्रधान दयानिधान

बड़े गाँव के चुनाव में इस बार पिछले कई सालों से प्रधान बनते आए कृपानिधान चुनाव हार गए थे और लच्छेदार भाषण देने वाले , जुमलेबाजी कर गाँव के लोगों को सपने दिखाने वाले दयानिधानभारी मतों से चुनाव जीत गए थे। दयानिधान अब बड़े गाँव के बड़े प्रधान थे। चुनाव जीतने की खुशी में नए प्रधान दयानिधान ने , दूसरे गाँवों के प्रधानों को अपने गाँव में बुलाकर , गाँव वालों की उपस्थिति में , सभी प्रधानों को प्रधानश्री की उपाधियाँ देकर उन्हें सम्मानित किया और पूरे गाँव को महाभोज दिया। बड़े गाँव वाले भी खुश और आसपास के प्रधान भी कि दिलदार प्रधान जीता है इस बार। पुराने प्रधान कृपानिधान ने , नए प्रधान के इस कार्य को सिर्फ अपनी इमेजबढाने वाला और सरकारी फण्ड का दुरूपयोग , बर्बादी बताया । बड़े गाँव के नए प्रधान दयानिधान ने बाद में गाँव वालों को बताया कि आसपास के ये प्रधान ,स्वयं मुझे बधाई देने आए थे और इसलिये मैंने आप सबको भी आमंत्रित किया कि आप भी गर्व के इन क्षणों के साक्षी बनें कि अपने गाँव का कितना सम्मान है। फिर दूसरे गाँव के प्रधानों ने भी बड़े गाँव के प्रधान को अपने गाँव बुलाकर सम्मानित किया और ऐसे ही बाकी के गाँव वाले भी बड़े गाँव के प्रधान को अपने गाँव बुलाकर सम्मानित करते रहे। पांच साल यूँ ही गुजर गए । बड़े गाँव के प्रधान दयानिधानके दरबारियों ने ,अपने गाँव के लोगों के बीच जाकर घर घर जाकर बताना शुरू किया कि अपने बड़े गाँव के नए प्रधान दयानिधानजी की कितनी इज्जत है ,सम्मान है कि उन्हें बुलाकर बड़े बड़े सम्मान दिए जा रहे हैं जबकि पहले के प्रधान जी तो गाँव से बाहर निकलते ही नहीं थे क्योंकि उन्हें कोई पूछता नहीं था क्योंकि उनकी कोई इज्जत ही नहीं थी। गाँव वाले भी खुश थे कि उन्हें ऐसा प्रधान मिला है जिसकी सब बड़ी इज्जत करते हैं। पांच साल यूँ ही गुजर गएअब बड़े गाँव में फिर से चुनाव आने वाले थे। नए प्रधान दयानिधान ने चुनाव से ठीक पहले ऐलान किया कि बड़े गाँव की समस्त महिलाओं को उनके परिश्रम को देखते हुए , स्वनिर्भर बनाने के लिए , सरकारी फण्ड से प्रतिमाह सौ रुपये दिए जाएंगे। उधर पुराने प्रधान कृपानिधान का दिल बैठ गया , वो अवसाद में हैं कि बड़े गाँव में आधी से अधिक आबादी तो महिलाओं की ही है और नए प्रधान दयानिधान ने अपने आधे वोट तो पक्के कर ही लिए और नए प्रधान दयानिधान फिर से दूसरी बार भी जीत गए।

अब बड़े गाँव के नए प्रधान ने ऐलान किया कि गाँव में अब नया प्रधान कार्यालय बनेगा , गाँव के इष्ट पुरुषों की बड़ी बड़ी प्रतिमाएं लगाई जाएंगी। पुराने प्रधान कृपानिधान के समर्थकों ने विरोध किया कि अभी तक तो प्रधानी, प्रधान के बड़े घर से ही चल जाती थी तो नया कार्यालय क्यों बनाया जाए। प्रतिमाएं लगाने से भी क्या हासिल होगा इसकी बजाय बड़े गाँव की नालियों पर खरंजा लगाकर उन्हें पक्का किया जाए तो गाँव को मच्छरों से मुक्ति मिलेगी ,लोग बीमार नहीं होंगे और खेतों में सिंचाई के लिए पास की नहर से गाँव तक ,पानी लाने का रास्ता बनाया जाए तो ज्यादा लाभ होगा। बड़े गाँव के नए प्रधान दयानिधानके दरबारियों ने गाँव वालों को बताया कि यह बड़ी सोच का समय है और हमें दूर की सोचना है। प्रतिमाएं लगाकर यदि हम अपने पुरखों को ही सम्मान नहीं देंगे तो कैसे काम चलेगा। नए प्रधान दयानिधानने बड़े गाँव की बहुमत वाली कौम के, गाँव के एक शिखर पुरूष की प्रतिमा और लगाने की घोषणा कर दी। इससे बड़े गाँव कीआधे से अधिक जनता और खुश हो गई।

बड़े गाँव के नए प्रधान दयानिधानने गाँव वालों पर , कुछ नए कर लगाए ,पुराने कर और बढ़ा दिए। गाँव के लोग हैरान परेशान थे। दयानिधान की आलोचना पूरे गाँव में हो रही थी। नए प्रधान दयानिधान की ओर से , बड़े गाँव में पूरे गाँव में एक रात को सुनियोजित तरीक़े से गाँव की दीवारों पर पोस्टर चिपकाए गए जिनका मजमून था कि गाँव के कुछ अधर्मी , अपने गाँव की विरासतों का , जड़ों का अपनी सियासत के लिए विरोध कर रहे हैं और हमने नए प्रधान को , गाँव के गौरव और स्वाभिमान के लिए चुना है और कुछ ग्राम विरोधी , नए करों का विरोध कर रहे हैं जबकि हमने नए प्रधान को ऐसे ही खास मकसदों के लिए चुना है न कि गलियों , नालियों की सफाई के लिए। पोस्टर से अधिकतर सहमत ही थे। बड़े गाँव में अब नए प्रधान दयानिधानके विरोध में बोलना , बड़े गाँव के विरोध में बोलना सा था ।

बड़े गाँव के एक मोहल्ले में दो विभिन्न वर्ग के लोग रहते थे। एक वर्ग को सरकारी राशन ज्यादा मिलता आया था क्योंकि उनके पास खेती के लिए जमीन नहीं थी तो दूसरा वर्ग भी अधिक राशन के लिए माँग लगातार करता आया था। दूसरे वर्ग के लोग , नए प्रधान के ही वर्ग थे तो नए प्रधान ने इस वर्ग को भी पहले वर्ग के समान अधिक राशन देने की घोषणा कर दी। इससे पहले वर्ग को लगा कि अब दूसरा वर्ग भी उनके बराबर राशन लेगा तो उन्हें और बढ़कर राशन मिलना चाहिए। मोहल्ले में रोज झगड़े होने लगे फिर रात में एक दूसरे के घर जलाए जाने लगे और यह सिलसिला खत्म ही नहीं हो रहा था। नए प्रधान दयानिधानकुछ बोल नहीं रहे थे उल्टेवो आसपास के गाँव जाकर ,मेलजोल बढ़ाते रहे। मोहल्ले में परस्पर आगजनी की घटनाएं रोज हो रहीं थीं और करीब एक साल से मोहल्ला अशांत था। पुराने प्रधान कृपानिधान के चमचों ने इसे नए प्रधान की अक्षमता बताया कि बड़े गाँव का एक मोहल्ला जल रहा है और नए प्रधान को चिंता ही नहीं है।

नए प्रधान के दरबारियों ने मोहल्ले की आगजनी के लिए पुराने प्रधान को जिम्मेदार बताने के पोस्टर फिर से लगा दिए कि पुराने प्रधान को अपनी हार बर्दास्त नहीं हो रही है इसलिए वो ही ये सब करवा रहे हैं। बड़े गाँव वाले फिर मान गए कि हो न हो मोहल्ले में एक दूसरे के घर जलाने में पुराने प्रधान का हाथ हो सकता है क्योंकि अपनी हार से वो खुद जले बैठे हैं तो मोहल्ले को भी जला रहे हों। नए प्रधान दयानिधानने गाँव वालों पर भैंस जैसे दुधारू जानवर पालने का टैक्स और लगा दिया था। अब बड़े गाँव में फिर से चुनाव आने वाले थे। ऐसे में पुराने प्रधान के एक पुराने दरबारी ने कहा कि पुराने प्रधान से कहकर वह चकबंदी और हदबंदी फिर से कराकर गाँव के सभी बचे हुए किसानों को लाभ पहुंचाएंगे । फिर क्या था नए प्रधान ने इस मुद्दे को पकड़ लिया और प्रचार करना शुरू कर दिया कि पुराने प्रधान यदि फिर से आ गए तो , चकबंदी मतलब अलग अलग भूमि , एक स्थान पर करने के नाम पर , छोटे किसानों की उपजाऊ कृषि भूमि अपने समर्थक किसानों को दे देगी और छोटे किसानों को चकबंदी के नाम पर बंजर भूमि मिलेगी , और तो और बड़े किसानों की ज्यादा जमीन को हदबंदी के नाम पर सरकारी बना देंगे । नए प्रधान ने अपने सभी दरबारियों को गाँव में घर - घर भेजकर समझाना शुरू कर दिया कि पुराने प्रधान जीत गए तो रही सही जमीन भी चली जायेगी। पुराने प्रधान ने अपना माथा कूटा और उलजलूल बयान देने वाले अपने दरबारी का माथा फोड़ दिया औरएन चुनावों के बीचतीर्थ यात्रा पर निकल गए।

लघुकथा

नेताजी और गिरगिट

प्रभुनाथ शुक्ल

देश में विचारधारा की लड़ाई है। चुनावों के मौसम में यह स्थिति एकदम साफ हो जाती है। राजनीति गिरगिट की तरह रंग बदलती है। हम गिरगिट और राजनीति में कोई फर्क नहीं समझते। गिरगिट जिस तरह रंग बदलता है उसी तरह राजनीति में हमारे नेताजी भी रंग बदलते हैं। हमारे नेताजी को देश और समाज की बड़ी चिंता है। कल तक वह विचारधारा से सेक्युलर थे। सार्वभौमिकता की बात करते थे। जाति-धर्म उनके लिए बेमतलब की बात थीं। जाति-धर्म की बात करने वालों से वह नफ़रत करते थे। लेकिन समय बदला तो उन्होंने वामपंथ का चोला ओढ़ लिया। अब लाल सलाम उनकी पहचान हो गई।

राजनीति ने पल्टीमारी यानी सत्ता सुख से वंचित हुए तो समाजवादी यानी लोहिया जी के विचारधारा के पोषक बन गए। समय के बाद हवा का रुख बदला तो सर्वहारा दलित, शोषित और वंचितों के सेवा की चिंता सताने लगी। वक्त बीता और सत्ता के भविष्य का संकट दिखा तो राष्ट्रवादी हो गए। अब तक जिस दक्षिणपंथ से नफ़रत करते रहे उसी के रंग में डूब गए।

हमारे नेताजी को खूंटे में बधना पसंद नहीं है। वह घुमक्कड़ प्रवृत्ति के हैं। जब प्रकृति परिवर्तनशील है तो नेताजी विचारधारा से क्यों बधे। कुछ इस तरह उन्होंने अपने भविष्य का निवेश किया और आज सेक्युलर, वामपंथ, दलित, समाजवाद और राष्ट्रवाद की सेवा करते-करते पूँजीवादी हो गए हैं। छप्पर से शुरू हुई उनकी समाजसेवा की राजनीति, राजमहल और स्विस बैंक तक पहुँच गई। क्योंकि वे गिरगिट तरह रंग बदलते रहे। जबकि नेताजी जी के साथ चलने वाली प्रजा जहाँ से चली थीं वहीं है। शायद ! जनता ने समय के साथ रंग बदलना नहीं सीखा।

कविता

मेरी संदूकची

अनुपमा अनुश्री, भोपाल

अहा! कितनी छोटी है मेरी संदूकची
लोग पूछते हैं तुम बड़ी हुई
तुम्हारी संदूक तो बस छोटी सी
सच कहा लोगों ने!
मैं बड़ी हुई न इस तरह
संदूकची भी बड़ी नहीं हुई !
कहाँ रख पाई मैं उसमें बनावटी जेवर
छल- कपट , दिखावे की मुद्राएँ
लालच का नौलखा हार
धोखे के दस्तावेज
बेईमानी की करधनी
और छीना -झपटी की पाजेब
नहीं हो पाई यह पिटारी भारी!
मेरे पास कहाँ ऐसे नक्काशी दार गहने
इसीलिए मेरी संदूकची भी छोटी रही।

हैं मधुमास से सजे डायरी के पन्ने
हाँ,यादों की एक किताब
जिन पर अंकित है माता-पिता
बुजुर्गों की शिक्षाओं की
महकती पंखुड़ियाँ
आशीर्वादों के खत
अपनो के स्नेह की गिन्नियाँ ,
ईमानदारी की सीप में
सच्चाई के कुछ उजले मोती
आराध्य की सुंदर मूर्ति!
निश्छलता की जमा पूंजी और
मेरी पसंदीदा कलम प्यारी सी
बस इतना ही सा तो था
फिर संदूक कैसे भारी होती!

अच्छी बात है कि
यह संदूक ताले से आजाद है
जहाँ जाती हूँ मेरे साथ ही
इसकी तब सामग्री खुल जाती है
महक ओ बिखर जाती है।
इन्हीं को सहेजा -समेटा
इस सुंदर संदूक में और खुद में।

राजकुमार कुम्भज -दो कविताएँ

1. क्या आप नहीं पहचानते हैं उसे?

पता करो, पता करो
वह कपड़े बदल रहा है या क़ानून?
वह क़ानून बदल रहा है या कारनामे?
वह कारनामे में बदल रहा है या कार्रवाई?
वह कार्रवाई बदल रहा है या साज़िशें?
वह साज़िशें से बदल रहा है या इरादे?
नहीं, वह इरादे नहीं बदल रहा है
वह बदल रहा है जगहें और यक़ीनन
जगहें बदलने से बदलते नहीं हैं इरादे
इरादों का बेहद पक्का है वह
पक्के इरादों को और पक्का करने की ख़ातिर
वह दिल्ली में, दिल्ली के लिए टहल रहा है
वह दिल्ली में, दिल्ली के लिए मचल रहा है
वह शालीन है और अनुशासन प्रिय भी
मरहम भी लगाता है तो चाकू की नोक से
शोर इतना है कि हर कोई बहरा हुआ है
देखते ही देखते ज़ख़्म गहरा हुआ है
अभिव्यक्ति पर आस्था का पहरा हुआ है
उसके हाथों में काठ की तलवारें हैं
उसके पास इतिहास की पतवारें हैं
वह काठ की तलवारों से कुछ काटना चाहता है
वह इतिहास से इतिहास को बॉटना चाहता है
उसके पास हँसी है, भाषा है, तमाशा है
मनभर मन की बात है, तौला है, माशा है
बात ही बात में बातों का बताशा है
बंदर जैसी कोई भी पूँछ नहीं है उसकी
हिटलर जैसी कोई भी मूँछ नहीं है उसकी
उसके पास नित नवीन कौतुक हैं
हिंसक आँखों में प्रार्थनाएँ लकदक हैं
अंधों की दुनिया है, आईने भरसक हैं
जल है, जाल है, जंजाल है, कमाल है
कहते हैं कि वह जादूगर बड़ा है
जो हमारे सामने भेष बदलकर खड़ा है
कुछ-कुछ पहचानता हूँ मैं उसे
क्या आप नहीं पहचानते हैं उसे थोड़ा बहुत भी नहीं
पता करो, पता करो.

2. दल-दल भी कुछ कम नहीं है

दल-दल भी कुछ कम नहीं है
कीचड़ ही कीचड़ है मेरे चारों तरफ़
क्या मैं इससे कभी भी बाहर नहीं निकल पाऊँगा?
मैं हाथ जोडूँगा, मिन्नतें करूँगा और प्रार्थनाएँ भी
उठाऊँगा ख़तरे अभिव्यक्ति के तमाम-तमाम
विनम्रता दिखाऊँगा और चापलूस समझ लिया जाऊँगा
डंडे खाऊँगा, झंडे उठाऊँगा, पीठ दिखाऊँगा
संडे हो या मंडे सिर्फ़ उन्हीं के फंडे गाऊँगा
बुज़दिल हूँ इतना कि न मरूँगा ना मारूँगा
भूख हो गई तो रोटी नहीं, चाँद पाऊँगा
पुरखों को मूरखों की तरह बार-बार याद करूँगा
नर से नारायण बन जाने का नारा लगाऊँगा
उनके हुक्के में अपनी आग भरूँगा
उफ़ नहीं करूँगा, चुप रहूँगा, हाँ-हाँ करूँगा
टूटकर सीधे उन्हीं के मूँह में गिरूँगा
हक़ीम ओझा से झाड़-फूँक करवाऊँगा
बाजा बजाऊँगा, फिर-फिर नाच दिखाऊँगा
कला नामक लड़की के साथ भाग जाऊँगा
सरकार की कार चलाऊँगा, कलाकार कहलाऊँगा
बाज़ार जाऊँगा और सामान्य सामान हो जाऊँगा
अनुमान के हनुमान को सच समझूँगा
सच कहता हूँ कि सचमुच झूठ बोलूँगा
क़सम उठाता हूँ कि ईमान से कम तोलूँगा
वादा करता हूँ कि वादा नहीं निभाऊँगा
मरघट जाऊँगा, मुर्दे सुलाऊँगा कि कहीं जाग नहीं जाएँ
लौटूँगा घर, वीरता दिखाऊँगा, औरत को पिटूँगा
विचारों का मुरब्बा बनाकर सो जाऊँगा
जूते उठाऊँगा, वफ़ादार कहलाऊँगा,
आदमी से कुत्ता हो जाऊँगा
था कभी आदमी था, भूल जाऊँगा
मान लूँगा कि दल-दल ही नहीं, कीचड़ भी है पवित्र
यही है मेरा उत्तर-आधुनिक आत्म-चित्र
और दल-दल भी कुछ कम नहीं.

एक एहसास बाकी है....

श्याम कुमार कोलारे

विश्वास इस कदर डोल रहा,
खुद पर एक विश्वास बाकी है।
अनजान भीड़ में भटकता अकेला
अपनों से एक तकरार बाकी है।
साँसे चल रही है गिन-गिनकर
जिंदगी का उधार बाकी है
जीवन मे रस है बहुत मगर
मीठे सपनो का एहसास बाकी है।

अपनो की भीड़ ने अकेला चला
दिले करीबी जस्बात बाकी है
उम्मीद के घन छाए बादल में
विश्वास की अब बरसात बाकी है।
जिंदा दफन किये रिस्तो को
धुँआ उड़ गया वश राख बाकी है।
विश्वास की नीव में खड़ी दीवारें
सुंदर प्रासाद का अरमान बाकी है।

तिनका-तिनका चुन बनाया घोसला
हर एक तिनके में जस्बात बाक़ी है
रंग चढ़ा था मेहनत का तस्वीरों में
कील पर टंगी दास्तान बाकी है।
हसरते थी महफ़िले तारीफ सुनने की
उस वक्त में छुपी तहज़ीब बाकी है।
आज सुकून में उदार बाहर आ गया
अब लडखडाती सी चाल बाकी है।

सुबह सवेरे मीडिया एल. एल. पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी. जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा.लि., राउखेड़ी, देवासरोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईंकृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक-उमेश त्रिवेदी
संपादक(म.प्र.)-गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक-अजय बोकिल
स्थानीय संपादक-हेमंत पाल
प्रबंध संपादक-अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNINo.MPHIN/2015/66040,
MobileNo.:09893032101
Email-subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वाइब्रेशन मोड पर रखे संग्रह से सुनाई देती व्यंग्य टोन

पुस्तक समीक्षा

मुकेश राठौर

समीक्षक

चर्चित रंगकर्मी और व्यंग्यकार सुनील सक्सेना का प्रथम प्रकाशित व्यंग्य संग्रह ÷चोर मचाए शोर÷ पढ़ने को मिला7संग्रह की रचनाएं शासन,प्रशासन,समाज और साहित्यिक विद्रूपताओं को उद्घाटित करती हुई दिखाई पड़ती है।रचनाएं छोटी-छोटी जरूर है लेकिन बड़ी बात कहने में सक्षम है।चूंकि सुनील सक्सेना जी कथाकार भी है,उनकी कहानियां यत्र-तत्र पढ़ी है,सो व्यंग्य की शैली कथात्मक है तो कहीं बटन को पात्र बनाकर संवाद करते भी नजर आए।बेशक सक्सेना जी दृष्टि और विचार संपन्न व्यंग्यकार है। यों तो संग्रह में सड़सठ रचनाएं हैं जिनमें से कुछ चिन्हित रचनाओं में संग्रह की प्रथम रचना 'एक तिलिस्मी चोरी' में पुलिसवाले के घर चोरी की कहानी है अफसोस वह इसकी प्राथमिकी भी दर्ज नहीं करवा सकता,क्यों ? यह जरा अंदर की बात है। रचना वक्रोक्तिपूर्ण है। नजारें बदल गए या बदल गई नजरे!'दर्दे सिर की दवा है चश्मा' में व्यंग्यकार समस्या की तह तक जाता जान पड़ा। अच्छाई के बरक्स बुराई के विस्तार पर चुटकी लेते हुए 'दशहरा और पिताजी का कंधा' में व्यंग्यकार बड़ी बात कहता है कि अब कोई बच्चा पिता के कंधे का मोहताज नहीं,बुराई का प्रतीक रावण हर जगह , हर एंगल से साफ नजर आता है। 'अंत्येष्टि का ड्रेसकोड' और 'मृत्यु संस्कार का कॉम्बोप्लान' में अभिजात वर्ग के दिखावे को आइना दिखाया है। संग्रह की शीर्षक रचना 'चोर मचाए शोर' छुपे चोरों के विरुद्ध जाहिर चोरों के कॉपीराइट के संघर्ष की दास्तान है। उठना हिंदी के देवगण का रचना हिंदी दिवस के आयोजन की औपचारिकताओं से मुक्ति का आइडिया सुझाती है। 'ताज पर आंच' ऐतिहासिक भूलों को सुधारने के बहाने बदले की कार्रवाई की ओर इशारा करती हैं'वो गंजों को कंघी बेच रहा है' पाटिया छाप चिंतन से पार्टियों के चिंतन शिविरों की शिनाख्त है।'कठिन लक्ष्यों के सॉफ्ट टारगेट' बड़े सियासतदानों द्वारा तय बड़े लक्ष्यों के लिए आम आदमी सॉफ्ट टारगेट बनाए जाते हैं।फोटो सास ससुर की ठोस रचना है जिसमें आधी आबादी को किसी टाइप के संवैधानिक आरक्षण नहीं अपितु घर के ड्राइंग रूम में भी बराबरी का दर्जा दिए जाने की जरूरत है 'पानी वाला विश्वयुद्ध' में कृत्रिम जलसंकट की पड़ताल है।

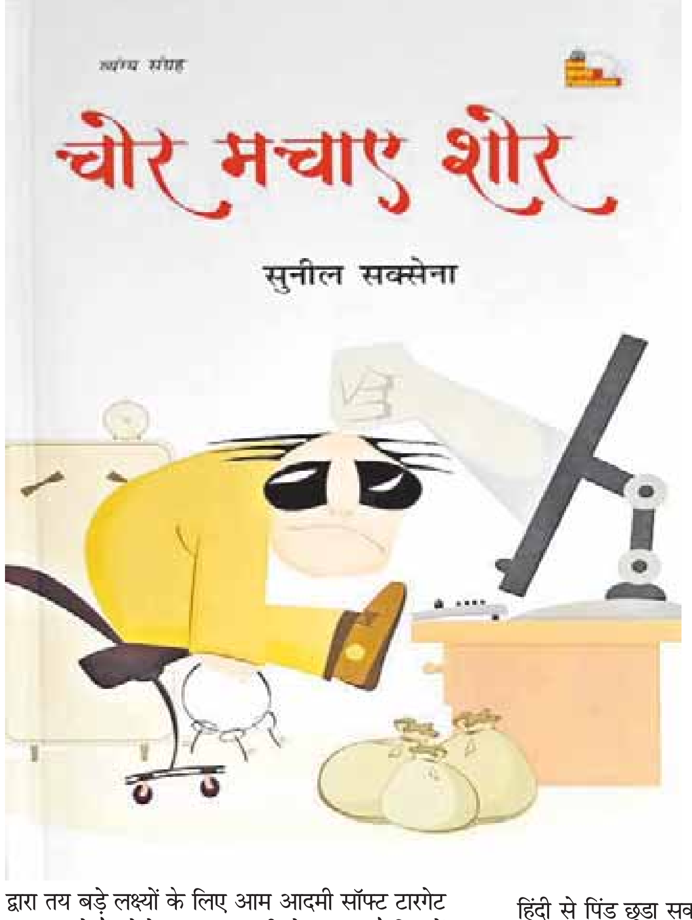

संग्रह के कुछ बेहतरीन पंच वाक्य

- कुछ अपराधों की कोई धारा नहीं होती और कुछ चोरियों की एफआईआर नहीं होती ।(एक तिलिस्मी चोरी)
- मर्ज है सिर का,खराबी है आंखों में और दवा है चश्मा7 (दर्दे सिर की दवा है चश्मा)
- आदमी भले ही सज्जनता का टीका माथे पर लगा लें पर अतीत के दुष्कर्मों का कलंक कभी नहीं मिटता ।(जब अभिमन्यु चक्रव्यूह में नहीं फंसा)
- शोक प्रदर्शन में आपके आंसुओं से ज्यादा वजन आपकी सफेद पोशाक का होता है ।(अंत्येष्ठि का ड्रेस कोड)
- प्रजातंत्र में तो वैसे भी सबको समान अधिकार है,फिर वो चाहे चोर हो या साहूकार।(चोर मचाए शोर)
- आप चाहे तो एक ही दिन हिंदी दिवस मनाकर हिंदी से पिंड छुड़ा सकते हैं।(उठना हिंदी के देवगण का)
- डरे हुए आदमी को अंधेरे में पड़ी रस्सी भी सांप नजर आती है।(अब अंतरात्मा की बात)
- बड़े लोगों के लक्ष्य हमेशा बड़े लोग होते हैं लेकिन टारगेट हमेशा छोटे लोग।(कठिन लक्ष्यों के सॉफ्ट टारगेट)
- आवाम की खामोशी में अंडर करंट होता है,वाइब्रेशन मोड पर रखे मोबाइल की घंटी नहीं सुनाई देती।(अब अंतरात्मा की बात)
- कद और ताकत में जब इज़ाफा होने लगता है तो निरंकुश होने की संभावना बढ़ जाती है।(उनके कद का बढ़ जाना)
- सियासतदानों की अश्रु ग्रंथि ब्लॉक रहती है।बस कभी कभार हल्का सा लीकेज हो जाता है।(रुदालियों का धंधा हुआ चौपट)
- एक बार आदमी हंड्रेड परसेंट आत्मनिर्भर हो जाए तो गुर्राने लगता है।(आत्मनिर्भर बनिए काम पर चलिए)

संग्रह की कुछ रचनाएं तत्कालिक विषयों यथा कोरोना और उससे उपजी स्थितियों पर केंद्रित है,जो आज पाठकों को बासी लग सकती है। कुछ रचनाओं में कसावट की कमी भी महसूस हुई। चिंत(चिंता), वैस (वैसा), टसुए (आंसू), सामना (सामान) जैसी वर्तनी की त्रुटियां भी दिखाई पड़ी,जो मुद्रण त्रुटि की श्रेणी में रखी जा सकती है। सक्सेना जी से आग्रह रहेगा कि अपना दूसरा संग्रह जब भी लाए तो रचनाओं की संख्या कम रखें और कुछ नए विषयों के साथ आए। बहरहाल,'चोर मचाए शोर' आप चोरी-छिपे नहीं बल्कि सपरिवार पूरी सीनाजोरी से पढ़ सकते हैं और संग्रह की रचनाएं पसंद आने पर सोशल मीडिया और मीडिया में संग्रह पर दो शब्द लिखकर बकायदा शोर भी मचा सकते हैं। सुनील सक्सेना जी को अपने पहले व्यंग्य संग्रह हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

पुस्तक का नाम-चोर मचाए शोर
लेखक-सुनील सक्सेना
प्रकाशक - न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन,नई दिल्ली
मूल्य-300/-

परिस्थितियों से जूझती और उबरती भारतीय कला

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

क ऋग्वेद, रामायण, महाभारत जैसे महाग्रंथों की बात करें या विष्णु धर्मोत्तर पुराण, दशकुमारचरित, गीत गोविंद या इससे भी आगे के ग्रंथों को देखें तो पाएंगे कि कला हमारे साथ हमेशा से ही रही है और समृद्ध अवस्था में रही है। मध्यकालीन समय में स्थिति बाहरी मुस्लिम आक्रांताओं की वजह से डांवांडोल होने लगी फलतः कृतियाँ सूक्ष्म होने लगीं लघु चित्रों एवं पटचित्रों की अधिकता होने लगी पर निरंतरता बनी रही। बंगाल, बिहार एवं नेपाल जैसे जगहों पर निर्मित पाल एवं जैन शैली में कृतियाँ छोटी जरूर बनीं पर कला के मर्म को जगाये रखीं। इलेस्ट्रेशन सा काम दिखता हैं यहाँ पर। तालपत्रों या भोजपत्रों पर लिखे ग्रंथों के बीच में ही जगह छोड़ दिया जाता था जहाँ कृतियों का निर्माण होता था। सिंदूर, नील, खड़िया, काजल जैसे स्थानीय और आसानी से प्राप्त खनिज रंगों का प्रयोग इसकी विशेषता रही है। उपर्युक्त रंग भारतीय कला में अधिकांशतः प्रयोग में आये हैं। चित्र प्रायः सवाचश्म और नाक लम्बी होती थी। देश तमाम आक्रांताओं से जूझ रहा था, लोग जूझ रहे थे और कला भी जूझ रही थी पर कला सृजन जरूर हो रहा था। राजस्थानी शैलियों में भी किए गए सृजन के महत्ता को हम कम नहीं आंक सकते बल्कि कह सकते हैं कि बहुत ही मजबूत स्थिति में वहाँ का सृजन भारत में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाती है।

मुगल काल तक आते-आते कला उच्च वर्ग के लोगों की वस्तु बनकर रह गई थी। कई स्थानों पर कृतियाँ पूरी तरह इस्लामिक बन गई थीं जबकि मुगलकालीन कृतियों में कलाकृतियों को बढ़िया विस्तार मिला पर विषय वही घिसे-पिटे, कह सकते हैं कि शासक के इशारों पर ही कृतियों का सृजन नहीं बल्कि निर्माण होता था। युद्ध में कलाकारों को ले जाना और चित्र बनवाना जैसे बचकाने कार्यों तक सिमट गया था कलाकार। हाँ पद, प्रतिष्ठा, मुद्राओं का कलाकार हो गया था उस समय का कलाकार। शासक और उसके परिवार, नाते-रिश्तेदारों के शबीह चित्र, किसी को भेंट करने हेतु कोई सुंदर सा नक्काशी वाला चित्र बस यही सब रह गया था। हाँ कुछ कलाकार थे जो अच्छा कर रहे थे पर संख्या नाममात्र में ही थी।

मध्यकाल के भारत में कृतियों पर संकट के बादल तो खूब दिखे, कलाकारों को खूब संघर्ष करना पड़ा, कृतियों को भी अस्तित्व की लड़ाई लड़नी पड़ी जो आगे भी जारी रही जिस पर विस्तार से लिखा जाना शेष है, फिर कभी चर्चा करूँगा। फिलहाल आधुनिक कलाकारों एवं कृतियों पर चर्चा का इरादा है। अंग्रेजी सत्ता के आने से कलाकार जो एक जगह रुक कर कार्य कर रहे थे सब तितर-बितर हो गये। कला शैलियाँ भी आपस में मिल सी गईं। कोई कलाकार पटना पहुँच गया तो कोई बंगाल पहुँच गया। खिचड़ी सी शैली पनपी उस बीच। कलाकार खुल कर अभिव्यक्ति भी नहीं कर पा रहे थे, अंकुश अधिक था जो धीरे-धीरे समय के साथ खुला तो पर अंग्रेजी हुकूमत और शैलियों के लेप के साथ। कलाकार जो स्वाभिमानी थे, अपने शर्तों पर कार्य करना चाहते थे, धीरे-धीरे चित्रों से दूरी बना लिए। जो खुद को समय के साथ ढाल लिए दूर तक चल सके। पटना कलम कुछ ऐसे ही अस्तित्व में आई। अब तक दरबारी चित्रकारी का तमगा भी गायब सा ही हो गया था। कलाकारों को जब रोजी-रोटी का संकट सताने लगा तो वे अपने मार्ग ही बदल लिए फलतः बीच में काफी समय तक कलाकृतियाँ मिलती ही नहीं है। रिक्तता सी दिखाई पड़ती है उस दौर में। अंग्रेजों के शासनकाल में जब तमाम जगहों पर कला विद्यालय खोले जाने लगे उसके बहुत समय बाद से फिर धीरे-धीरे कृतियाँ नजर आने लगती हैं और आगे तो आधुनिकता के आकाश में आते ही सारे बंधन टूट जाते हैं और भारतीय कलाकार वैश्विक स्तर पर अपनी अलग पहचान रखने लगे हैं।

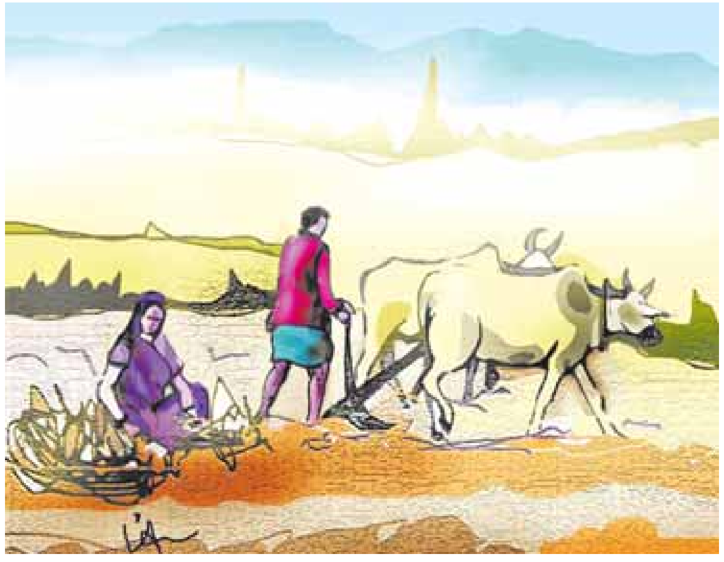

भारतीय कला का इतिहास तो अथाह है, जहाँ तक हम सबने थाह पाया है वो पूरे का बस कुछ प्रतिशत ही है कारण भारत के सभी कलाकारों को तथा उनके कला को समझ पाना असंभव है। सभी कलाकारों तक हम पहुँच भी पाएंगे शायद ही सोचा जा सकता है। बहुत-बहुत कुछ छूट गया है खैर हम बात करेंगे इधर बीच की कला पर या कला में आधुनिकता पर। प्रागैतिहासिक, अजंता, एलोरा, खजुराहो, मध्यकालीन पोथी चित्र, राजस्थानी, पहाड़ी, मुगल कला के रास्ते हम आधुनिक भारतीय कला तक का सफर तय करते हैं, उतार-चढ़ाव भी देखते हैं। यहाँ तक पहुँचते-पहुँचते भारतीय कला पंगुता को प्राप्त कर चुकी थी कारण वही परतंत्रता का दंश ही था। कुछ कलाकारों को छोड़ दिया जाय तो शायद ही कोई कलाकार रहा हो जो स्वतंत्रता विषयक चित्र बनाया हो जिसे देखकर जनता में आक्रोश फूटा हो। सौंदर्य एवं प्राकृतिक विषयक कृतियां शबीह और पक्षियों तक सीमित हो चुके थे। ये सब भी बस मुगल तक ही रहा। मुगल साम्राज्य के पतन के साथ ही आश्रय के खोज में भटकते कलाकार अपने कला और कल से भी भटक गये। उसके बाद कला की छिटपुट गतिविधियां दिखती तो हैं पर निरंतरता, स्पष्ट विवेचनीय कार्य देखने को नहीं मिलता। हालांकि हमारे कलाकारों में पूरी काबीलियत थी जिसका बढ़िया उदाहरण जहाँगीर के समय में तैयार एक यूरोपीय कृति की कई अनुकृतियाँ रहीं जहाँ मूल कृति को पहचान पाना मुश्किल हो उठा, पर कलाकारों को सृजन हेतु मानसिक मजबूती के लिए पर्याप्त माहौल नहीं मिल सका। भारतीयों के प्रति अंग्रेजों के दूषित रवैये ने कुछ समय के लिए भारतीय कला को पटल से गायब ही कर दिया था। कलाकृतियाँ निर्मित तो नहीं हो पा रहीं थीं पर कुछ कलाकार जो कायदे का आर्थिक लाभ भले नहीं प्राप्त कर पा रहे थे फिर भी लगे हुए थे। भटकते हुए कलाकार बिखर गये और कई अलग-अलग जगह रहने लगे। किसी न तैर सकने वाले को बीच मझधार में छोड़ देने पर जो हाल होता है कुछ वही हाल था भारतीय कलाकारों का पर भारतीय कलाकारों ने डूबने के बजाय संघर्ष करना जारी रखा। इन सभी से अलग राजा रवि वर्मा अपने सृजन में रमें रहे। वर्मा के कृतियों में कई सारी खूबियाँ एक साथ देखी जा सकती है। वैचारिक स्वतंत्रता का जबरदस्त प्रतिफल इनके कृतियों में नजर आता है। बहुत कुछ था जो उस समय भी काफी था कला के नाम पर। उधर अंग्रेजी अधिकारी भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से भी प्रभावित नज़र आ रहे थे फलतः छिटपुट कलाकारों से यहाँ के संस्कृतियों को उजागर करती कृतियाँ बनवाते और अपने यहाँ भेजवा कर व्यापारिक लाभ भी प्राप्त कर रहे थे। अंग्रेजों द्वारा तमाम परिवर्तन के साथ ही मद्रास, कलकत्ता, लाहौर, बंबई जैसे जगहों पर कला के भी विद्यालय खोले गए जहाँ भारतीयता तो नदारद थी ही तकनीक भी यूरोपियन थी। भारतीय कला पर अंग्रेजों का प्रभाव तो पहले से ही बढ़ रहा था पर इन विद्यालयों के स्थापना के बाद अब पश्चिमी सभ्यता को व्यवस्थित तरीके से यहाँ के कला छात्रों विशेष कर धनाढ्य वर्ग के छात्रों में भरा जा रहा था, जहाँ अप्रत्यक्ष तौर से भारतीय कला को पश्चिमी कला से तुच्छ बताए जाने की कोशिश भी हो रही थी। अजंता, एलोरा आदि जहाँ शैली, सौंदर्य, विषय संबंधी संपन्नता सदियों से विराजमान रही है, को कमतर दिखाने का प्रयास किया जाता रहा। पाश्चात्य पाठ्यक्रम का असर दिखा और कलाकार कम मशीन ज्यादा बने, जिसका कमांड किसी और के हाथ में होता था। छात्र भारतीय और पाश्चात्य के बीच पेंडुलम से झूल रहे थे तथा हार मान कर उनको ही सही मान ले रहे थे। भारतीय कला में पाश्चात्य के आने से नुकसान तो हुआ पर काफी कुछ नया सीखने को भी मिला भारतीय छात्रों को। छात्र तकनीकी रूप से प्रबल तो हो रहे थे पर दुख इनके भीतर से गायब होते भारतीयता से था। एक से बढ़कर एक संपन्न कलाकृतियों वाले देश के छात्र अपने पर भरोसा नहीं कर पा रहे थे, वे अपने कृतियों को श्रेष्ठ मान सकने से पूर्व ही भ्रमित हो जा रहे थे। उधर वैश्विक स्तर पर भी बहुत कुछ उथल-पुथल हो रहा था। कई देशों में आधुनिकता के नाम पर कला में तमाम प्रयोग हो रहे थे। कलाकार स्वतंत्र होकर यथार्थवाद, प्रभाववाद, उत्तर प्रभाववाद सहित और भी कई वादों में मगन थे जबकि यहाँ बहुत कुछ होना शेष था।

एक दशक में राजनीतिक हुआ हिंदी सिनेमा का चेहरा

राजनीति

जावेद अनीस

लेखक स्तंभकार हैं।

यह भारतीय राजनीति और समाज के लिये भारी उठापटक भरा दौर है, साल 2014 के बाद से एक राष्ट्र और समाज के तौर पर भारत को पुनर्परिभाषित करने के सुव्यवस्थित प्रयास किये गये हैं, जाहिर है इससे फिल्में भी अछूती नहीं हैं। इस दौरान हिन्दुस्तान का सॉफ्ट पॉवर कहा जाने वाला हिंदी सिनेमा को सॉफ्ट टारगेट बनाया गया, कभी देवताओं की तरह पूजे जाने वाले उसके सितारों को घृणा और बायकॉट अभियानों का शिकार बनाया गया, हिंदी सिनेमा को हिन्दू-मुस्लिम के साम्प्रदायिक बहस के चपेट में ढकेला गया। देश में अचानक ऐसी फिल्मों की बाढ़ आ गयी जिसमें मुसलमानों,वामपंथियों और उदारवादियों को खलनायक के तौर पर पेश किया गया है। इन सबका जुड़ाव 2014 के भगवा उभार, बॉलीवुड में खान सितारों के वर्चस्व व फिल्मी दुनिया की धर्मनिरपेक्ष मिजाज से है।

दरअसल पिछले दस वर्षों में हिंदी सिनेमा को सांस्कृतिक वर्चस्व की लड़ाई का मैदान बना दिया है। इसके पीछे कई कारण हैं, इसमें कोई संदेह नहीं कि आजादी के बाद दशकों तक भारतीय सिनेमा पर नेहरुवादी समाजवाद और वामपंथी प्रभाव रहा है। अब सत्ता के केंद्र में आने के बाद हिन्दुत्वादी ताकतें सिनेमा के इस सॉफ्ट पॉवर की सीधे तौर पर नियंत्रित करते हुये इसका अपने तरीके से उपयोग करना चाहती हैं।

एक और कारण बॉलीवुड के शीर्ष तीन 'खान' सुपरस्टार हैं जो नब्बे के दशक से बॉलीवुड और दर्शकों के दिलों पर राज कर रहे हैं और जिनके प्रशंसक धार्मिक सीमा रेखाओं से परे हैं। इन तीन सितारों की अभूतपूर्व लोकप्रियता हैरान कर देने वाली है और वे हमें पुरानी सुपरस्टार तिकड़ी राज कपूर, देव आनंद और दिलीप कुमार की याद दिलाते हैं। इतने व्यापक ध्रुवीकरण वाले समय में भी हिंदी सिनेमा के इस अनोखी स्थिति को लेकर हिन्दुत्वादियों की चिढ़ समझी जा सकती है। इसलिए पिछले एक दशक से खान सितारे लगातार उनके निशाने पर बने रहे हैं। इस दौरान सोशल मीडिया पर उन्हें ट्रोल किया जाना या उनकी फिल्मों के बहिष्कार की मांग बहुत आम रही है।

दिवगंत अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की रहस्यमयी मौत के बाद तो बॉलीवुड के खिलाफ सुनियोजित बायकॉट अभियान चलाया गया जिसमें पूरी फिल्म इंडस्ट्री को नशेड़ी और अपराधियों का नेटवर्क के तौर पर पेश करने की कोशिश की गयी। इस संबंध में बीबीसी द्वारा किये गये पड़ताल में पाया गया कि बॉलीवुड और उसके कलाकारों के खिलाफ़ किसी योजना के तहत एक नकारात्मक अभियान चलाया गया, बॉलीवुड के खिलाफ़ दुष्प्रचार फैलाने वाले अधिकतर लोग बहुसंख्यक दक्षिणपंथी विचारधारा के हैं और उनका जुड़ाव सत्ताधारी पार्टी से भी है। बायकॉट अभियान को समझने के लिए दक्षिणपंथी न्यूज़ पोर्टल 'ऑपइंडिया' में 'बायकॉट बॉलीवुड- क्या यह वास्तव में आवश्यक है?' शीर्षक से प्रकाशित लेख का जिक्र मौंजू होगा जिसमें चिंता जाहिर की गयी है कि बायकॉट अभियान की वजह से पूरी फिल्म इंडस्ट्री का विरोध ठीक नहीं है, लेख में असली दुश्मन को पहचानने की सलाह दी गयी है, जाहिर हैं वो दुश्मन तीनों खान और उनका स्टारडम है। लेख में आह्वान किया गया है कि हमें हिंदी फिल्म उद्योग को खत्म नहीं करना है बल्कि हमें हिंदी फिल्मों से उर्दू को हटाना है, हमें हिंदी फिल्मों में गलत इतिहास को दिखाने से रोकना है, हमें हिंदी फिल्म उद्योग से वामपंथियों के गैंग के एजेंडे को खत्म करना है, हमें हिंदी फिल्म उद्योग से हिंदू विरोधी सरगनाओं से छुटकारा पाना है, हमें हिंदी फिल्म उद्योग का शुद्धिकरण करना है÷।

सांस्कृतिक वर्चस्व की इस लड़ाई में आज हमारे समाज की तरह बॉलीवुड भी खेमों में बंट गया है, यहां भी हिन्दू-मुस्लिम आम हो चुका है और पूरी इंडस्ट्री जबरदस्त वैचारिक दबाव के दौर से गुजर रही है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने तीन मई को कर्नाटक में एक चुनावी जनसभा में 'द केरल स्टोरी' का जिक्र करते हुये कहा कि इस फिल्म में केरल में चल रही 'आतंकी साजिश' (लव जिहाद) का खुलासा किया गया। इससे पूर्व फरवरी 2024 में प्रधानमंत्री जम्मू कश्मीर की एक सभा में लोगों को 'आर्टिकल 370' फिल्म देखने की सलाह देते हुये कह चुके हैं कि 'मैंने सुना है कि 'इस हफ्ते 'आर्टिकल 370' पर एक फिल्म रिलीज होने वाली है, ये अच्छी बात है, क्योंकि इससे लोगों को सही जानकारी हासिल करने में मदद मिलेगी÷ दरअसल पिछले एक दशक में हिन्दुत्वादी एजेंडे पर आधरित फिल्मों को भाजपा के केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा जबरदस्त तरीके से प्रचार किया जाता रहा है जिसमें प्रधानमंत्री से लेकर मुख्यमंत्री तक शामिल रहते हैं।

लेकिन 2014 में केंद्र में मोदी सरकार के आने के बाद हिंदी फिल्म इंडस्ट्री का एक खेमा संघ और भाजपा विचारधारा पर केन्द्रित ऐसी फिल्मों का निर्माण कर रहा है जो बहुत ही खुले तौर पर साम्प्रदायिक विभाजन के नैरेटिव को बढ़ावा देती हैं। इन फिल्मों के फेहरिस्त में द एक्सिडेन्टल प्राइम मिनिस्टर, द केरला स्टोरी, द कश्मीर फाइल्स, पी.एम. नरेन्द्र मोदी, 72 हूरें, द वैक्सीन वार, मैं अटल हूँ, स्वातन्त्रयवीर सावरकर, आर्टिकल 370, बस्तर-द नक्सल स्टोरी जैसी फ़िल्में प्रमुख रूप से शामिल हैं।

2024 के लोकसभा चुनाव से ठीक पहले 'बस्तर द नक्सल स्टोरी' रिलीज हुई जिसको लेकर दावा किया गया है कि फिल्म पिछले 60 वर्षों से भारत में व्याप्त माओवाद-नक्सलवाद वामपंथ के गहरे गठजोड़ को उजागर करती है, फिल्म के निर्देशक सुदीप्तो सेन हैं जिनकी पिछली फिल्म 'द केरला स्टोरी' भी काफी विवादित रही थी। इसी प्रकार से 'जेएनयू' जहांगीर नेशनल यूनिवर्सिटी' 5 अप्रैल को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली थी, जिसे बाद में स्थगित कर दिया गया, इसी प्रकार से गोधरा कांड पर बनी फिल्म 'एक्सीडेंट ऑर कॉन्सपिरेसी गोधरा' जो इस साल मार्च को रिलीज होने वाली थी, सेंसर बोर्ड सर्टिफिकेट ना मिलने की वजह से तय समय रिलीज नहीं हो पाई।

कुछ और फिल्में भी लाईन में हैं जिसमें 'रजाकरः साइलेंट जेनोसाइड ऑफ हैदराबाद' प्रमुख रूप से शामिल है जिसका निर्माण भाजपा तेलंगाना राज्य कार्यकारी समिति के सदस्य, गुडुर नारायण रेड्डी द्वारा किया गया है। इसके अलावा दीनदयाल उपाध्याय, आरएसएस के संस्थापक डॉ।हेडगेवार की जीवनी पर भी फिल्में बन रही हैं।

लेकिन इन तमाम प्रयासों के बावजूद बॉलीवुड की पुरानी जमीन अभी भी बची हुई है, इस दिशा में साल 2023 के शुरू में रिलीज़ हुई फ़िल्म 'पठान' ने बॉयकॉट अभियान के चक्रव्यूह को तोड़ने का काम किया है और एक प्रकार से मुश्किल में पड़े बॉलीवुड के वापसी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। इस फिल्म ने एक प्रकार से बॉलीवुड को लेकर बनाये गये ख़ास नैरेटिव को तोड़ने का काम किया। शायद इसी वजह से फिल्मकार अनुराग कश्यप ने पठान की सफलता को सोशियो-पॉलिटिकल उल्लास बताया था।

हिंदी फ़िल्म इंडस्ट्री ने 2013 में अपने सौ साल पूरे कर लिए थे। अपने तमाम सीमाओं के बावजूद पूरी दुनिया में इसकी पहचान अपनी खास तरह की फिल्मों के लिये है। यह हमारे उन चंद पेशेवर स्थानों में है जो समावेशी हैं और जिनका दरवाजा सभी के लिये खुला है। यही बात बहुसंख्यक दक्षिणपंथियों को हमेशा से ही खटकता रहा है। इसलिए आज वे बॉलीवुड को भी अपना भोंपू बना लेना चाहते हैं और इसके लिए वे हर हथकंडा अपना रहे हैं। आने वाले समय मे बॉलीवुड पर नियंत्रण के प्रयास और तेज होंगें लेकिन अपनी पहचान और अस्तित्व बनाये रखने के लिए उसके पास कोई और चारा भी तो नहीं है।

शिवेश प्रताप की पुस्तक 'मोदी दशक' का विमोचन

दिल्ली। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता एवं सांसद डॉ. सुधांशु त्रिवेदी ने लेखक एवं स्तंभकार शिवेश प्रताप की पुस्तक मोदी दशक का लोकार्पण किया। प्रभात प्रकाशन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सुधांशु त्रिवेदी ने कहा की मोदी दशक, भारत के राजनीतिक परित्राण का दौर है तथा देश में विकास आधारित राजनीति का एक नया विमर्श स्थापित हुआ है। मुख्य अतिथि शहजाद पूनावाला ने कहा कि मोदी दशक ने बिना किसी पंथ, मजहब या क्षेत्र देखे सबका साथ और सबका विकास को सुनिश्चित करते हुए देश के विकास के जो आधारशिला रखी है इस पर विकसित भारत का निर्माण होगा।

लेखक शिवेश प्रताप ने कहा कि मोदी सरकार ने 2014 में आने के बाद देश के संपूर्ण विमर्श को भारत माता, विकास और आत्मनिर्भरता पर केंद्रित कर दिया। मोदी दशक, विकसित भारत की आधारशिला बन रहा है और पूरे विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ रही है।

इस पुस्तक की भूमिका भाजपा सांसद एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रहे बलबीर पुंज ने लिखी है। इस पुस्तक में कुल 34 अध्यायों के द्वारा विकास के लगभग सभी आयामों पर चर्चा की गई है।

समुदाय जिसके प्रति संवेदनशील होना ज़रूरी

वेब समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक हैं)

मर्डर इन माहिम 'आठ एपीसोड वाली वेबसिरीज़ है ,जो एलजीबीटी समुदाय पर और ख़ासतौर पर उनकी दिनचर्या और उनकी समस्याओं पर केन्द्रित हैं । सिरीज़ , इस समुदाय पर पैनी नज़र के साथ जो पड़ताल करती है उससे इस समुदाय के प्रति जनसाधारण की मानसिकता और दृष्टिकोण का भी अंदाज़ होता है। असल में इस सिरीज़ का मंतव्य इस तथ्य को संस्थापित करना है कि इस समुदाय के प्रति जनसाधारण का संवेदनशील होना बेहद ज़रुरी है ।बॉम्बे के इतिहासकार जेरी पिण्टो के इसी नाम के उपन्यास पर आधारित यह सिरीज थोड़े जोड़ बाकी और विषय से दांये-बांये होने के कारण थोड़ी भटकती ज़रुर है मगर फिर थोड़ी थिर जाती है ।

यह वेबसिरीज़ एक विशेष कालखंड में घटित घटना -दुर्घटना का लेखा जोखा हैजैसा कि सिरीज के नाम से ही ज़ाहिर है , कहानी मुम्बई के माहिम रेलवे स्टेशन के शौचालय में हुए एक कत्ल से शुरू होती है। कातिल क्रूर है, आँतें बाहर निकालकर फेंक गया है। इधर घर में अपने पिता से झगड़ा कर रहे इंस्पेक्टर झेण्डे को सूचना मिलती है। तफ्तीश शुरू होती है। साथ में एक युवती है। नई नई पुलिस में भर्ती हुई है। दो दरोगा भी जय विजय की तरह कहानी में प्रकट होते रहते हैं। कहानी का दूसरा सिरा उस पूर्व पत्रकार से जाकर जुड़ता है, जिसे संदेह है कि कहीं उसका बेटा भी तो समलैंगिक नहीं है। कहानी पुरानी मुम्बई की गलियों में घूमते फिरते बार बार उसी चौराहे पर आकर फूटती है, जहाँ इसका दम निकलता है।

एक क्राइम थ्रिलर के रुप में यह सिरीज कुछ अलग दिखाई दे इसकी कहीं कोई कोशिश नहीं की गई है । सैकड़ों के भाव में ऐसी ही कहानियों पर बन चुके अपराध धारावाहिकों से इसे अलग किया जा सके यह कोशिश भी कहीं नज़र नहीं आती है । निर्देशक विजय आचार्य की पूरी कोशिश वेबसिरीज 'मर्डर इन माहिम' को जमीन से जोड़े रखने में है और इस चक्कर में उनकी टीम उन्हीं इलाकों में बार बार घूमती रहती है जिन इलाकों में मुम्बई की चकाचौंध की बातें सुनकर इस शहर में आने वाला कभी नहीं जाना चाहता। सिरीज़ दर्शकों को उस गंदगी भरी मुम्बई में ले जाना चाहता है जहाँ जाने की उसकी किंचित इच्छा भी नहीं है ।आठवें एपिसोड तक सिरीज को देखते रहना अपने आप में चुनौती है। उधर, सिरीज के चरित्रों के सामने चुनौती है अपने काम के साथ साथ अपने घर परिवार में चल रही दिक्कतों को भी सुलझाते रहने की। बहुत सधा सधाया फॉर्मूला बन चुका है ये ओटीटी पर प्रसारित होन वाली क्राइम वेब सीरीज का जिसे इसमें भी अपनाया गया है ।

इस सिरीज की एक बड़ी खामी यह है कि यह दिखाती कम है और बताती ज्यादा है। यहाँ तक जब झेण्डे की सहकर्मी जब अपनी पसन्द के बारे में खुलासा करती है तो इसका असर बनाने के लिए कहानी के दृश्य नहीं गढ़े जाते हैं, बल्कि संवादों से सारी बातें दर्शकों को बताई जाती है। कहानी बहुत सपाट है।पटकथा उससे ज्यादा हल्की और निर्देशन का तो खैर कहना ही क्या, जो आचार्य को मिला, उसे ही उन्होंने आगे पढ़ा दिया। अभिनय के मामले में इसमें कम से कम तीन कलाकार ऐसे हैं जिनके अभिनय के नए आयाम ये सिरीज खोल सकती थी। आशुतोष राणा के किरदार का ग्राफ भी अच्छा है। उनके 'ऑपरेशन' से उनके ही दोस्त झेण्डे के पिता की नौकरी चली गई। मामला संगीन होता देख दोनों दोस्त फिर साथ आते हैं। लेकिन, झेण्डे पुलिस वाला है। वह अपने दोस्त पर भी शक कर सकता है। दोनों को मनमुटाव दूर करना होता है तो वो समुद्र के तट पर जाते हैं। और, कहीं क्यों नहीं बतिया सकते, इसके लेखक और निर्देशक ही जानें।आशुतोष राणा का अभिनय इस सिरीज़ को कुछ और खास बनाने में ज़रा भी मददगार साबित नहीं हुआ है । विजय राज का काम भी बहुत चलताऊ किस्म का है और सौ दफा लोग उनको यूं ही रस्म अदायगी करते देख चुके हैं । स्मिता ताम्बे और शिवाजी साटम जैसे कद्दावर कलाकारों का भी उपयोग इस कहानी में कायदे से नहीं हुआ है। शिवानी रघुवंशी से आने वाले दिनों की कुछ आशाएं जरूर बंधती हैं, लेकिन उनको अपने अभिनय में थोड़ा ठहराव लाना होगा।

प्रभात पट्टन रोड पर मोटरसाइकिल से गिरे दंपति

गंभीर अवस्था में पहुंचे अस्पताल उपचार जारी

बैतूल / मुलताई। नागपुर नेशनल हाईवे 47 के प्रभात पट्टन रोड पर बाइक अनियंत्रित होने से बाइक पर सवार दंपती सड़क पर गिरकर घायल हो गए। बताया जा रहा है कि गुनता पति दुर्गादास गलफट निवासी रायआमला अपने पति दुर्गादास के साथ बाइक से ग्राम मालेगांव जा रही थी। तभी अचानक नेशनल हाईवे 47 के प्रभात पट्टन रोड पर उनकी बाइक अनियंत्रित हो गई और वे दोनों बाइक से गिरकर घायल हो गए। जिन्हें 108 एंबुलेंस की मदद से मुलताई नगर के सरकारी अस्पताल लाकर भर्ती कराया गया। जहां पर डॉक्टर द्वारा उनका प्राथमिक उपचार किया गया।

बाबा खाटू श्याम भक्त रोहित ने तय की 850 किमी की यात्रा

भीषण गर्मी भी रोक नहीं पाई भक्त की लगन को

बैतूल। भीषण गर्मी में लोग घर से बाहर निकलने में बच रहें हैं। ऐसे में ग्राम भडूस के निवासी युवक रोहित राजपूत ने बाबा खाटू श्याम के दर्शन का पदयात्रा के माध्यम से जाने का संकल्प लिया और वह अब सफल होते दिख रहा है। श्री राजपूत अभी तक 850 किमी की पदयात्रा कर चुके हैं और 100 किमी शेष रह गए हैं। राष्ट्रीय हिन्दू सेना के प्रदेश अध्यक्ष दीपक मालवीय ने बताया कि श्री राजपूत ने यात्रा 28 अप्रैल को भडूस से प्रारंभ कर पाठर, सोहागपुर, भौरा इटारसी, नर्मदापुर,मंडीदीप भोपाल,शाजापुर, नरसिंहगढ़ ब्यावरा, खिलचीपुर, अचीवर,सुकेत, कोटा, अभी बूंदी शहर तक श्याम भक्त रोहित यात्रा कर चुके है। यात्रा के दौरान रोहित रास्तों के मंदिरों मे विश्राम कर रहे हैं। बाबा श्याम भक्त रोहित सिंह राजपूत ने बताया की वे यात्रा निरंतर कर रहें हैं और उन्हें बाबा के दर्शन करने के लिए और 10 दिन लग सकते हैं। राष्ट्रीय हिन्दू सेना के पदाधिकारियों ने उनकी यात्रा के लिए उन्हें शुभकामनाएं दी हैं।

नि:शुल्क कला शिविर कल से

बैतूल। नृति डांस एकेडमी बैतूल के तत्वावधान में कल सोमवार, दोपहर 3 बजे से 8 बजे तक सांदीपनी विद्यानिकेतन स्कूल लिंक रोड में 30 दिवसीय निःशुल्क कला शिविर (समर कैंप) आयोजित किया जा रहा है। संस्था के सोनू ठाकुर ने बताया कि शिविर में सभी आयु वर्ग के बालक-बालिकाएं एवं महिलाएं भाग ले सकते है। इस शिविर में डांस, पेंटिंग, आर्ट एंड क्राफ्ट एवं फिटनेस के लिए जुम्बा, एरोबिक का निशुल्क प्रशिक्षण दिया जाएगा। श्री ठाकुर ने सभी से इस निःशुल्क कैम्प का लाभ लेने का आग्रह किया है।

आवाज़ दो हम ज़िन्दा है यूथ क्लब, ने मातोश्री वृद्धाश्रम में वितरित किए दैनिक उपयोगी सामान

बैतूल। मातोश्री वृद्धाश्रम ग्राम उड़दन में आवाज़ दो हम ज़िन्दा है यूथ क्लब द्वारा सेवा कार्य के तहत वृद्धाश्रम में रहने वाले वरिष्ठजनों को दैनिक उपयोग के आवश्यक सामान वितरित किए गए। इनमें चप्पल, तौलिया, सर्फ़, साबुन, पेस्ट, ब्रश, नेल कटर, नहाने का साबुन, तेल, अगरबत्ती, शैम्पू, कंघा, बोरो प्लस पावडर, और ईयरबड्स शामिल थे।

यूथ क्लब का उद्देश्य समाज के वंचित वर्गों की सहायता करना है, जिसमें गरीब बच्चों की शिक्षा, गरीबों की मदद, सामाजिक कार्य, युवाओं को रोजगार दिलाने में मदद, अनाथों और विधवाओं की सहायता शामिल है। इस कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य वृद्धाश्रम में रहने वाले बुजुर्गों को उनकी दैनिक जरूरतों के सामान उपलब्ध कराना था, जिससे उनका जीवन थोड़ा सरल और सुविधाजनक हो सके। यूथ क्लब के सदस्यों ने इस अवसर पर कहा कि वे समाज सेवा को अपना कर्तव्य मानते हैं और आगे भी इसी प्रकार के कार्यों को निरंतर करते रहेंगे। वृद्धाश्रम के वरिष्ठजनों ने इस सहयोग के लिए क्लब के सदस्यों का धन्यवाद किया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस कार्यक्रम की सफलता में क्लब के सभी सदस्यों का समर्पण और प्रयास सराहनीय रहा, जो युवाओं के समाज के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और योगदान को दर्शाता है।

विश्वकर्मा बढ़ई समाज समिति आज करेगी मेधावी छात्रों का सम्मान

वरिष्ठ नागरिक छात्रों को शैक्षणिक सफलता के लिए मार्गदर्शन और प्रेरणा देंगे

बैतूल। विश्वकर्मा बढ़ई समाज समिति, जिला बैतूल, अपने समाज के मेधावी छात्रों का सम्मान करने जा रही है। समिति ने इस वर्ष 2024 में 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को सम्मानित करने का निर्णय लिया है। यह सम्मान समारोह आज रविवार 19 मई को विश्वकर्मा मंदिर, बैतूल गंज में शाम 4 बजे आयोजित किया जाएगा।

समाज समिति के अध्यक्ष गणेश मालवी ने बताया कि यह सम्मान समारोह एमपी बोर्ड और सीबीएसई में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्रों के मनोबल को बढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के आयोजनों से मेधावी छात्रों को प्रेरणा मिलेगी, साथ ही जिन छात्रों ने अपेक्षाकृत कम अंक प्राप्त किए हैं, वे भी भविष्य में अधिक मेहनत करने के लिए प्रोत्साहित होंगे। समिति ने सभी सामाजिक बंधुओं से अपील की है कि वे समारोह में उपस्थित होकर बच्चों को आशीर्वाद प्रदान करें और उन्हें उनके उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दें।

रेल विभाग ने परमंडल रेलवे गेट क्रमांक 264 किया हमेशा के लिए बंद, ग्रामीणों ने जताया विरोध

अंडर ब्रिज का कार्य पूर्ण हुए बगैर गेट बंद किया जाना गलत

बैतूल / मुलताई। भोपाल से नागपुर रेलवे लाइन पर मुलताई के पास ग्राम परमड़ल पर स्थित मध्य रेलवे के गेट क्रमांक 264 को आज 18 मई से रेल विभाग ने स्थाई रूप से बंद कर दिया है। जिसको लेकर ग्राम प्रमंडल सहित अनेक ग्रामों के ग्रामीणों में रोष व्याप्त है। जिसको लेकर ग्राम प्रमंडल के सरपंच उप सरपंच और ग्रामीणों ने अधूरे अंडर ब्रिज एवं रेलवे गेट पर पहुंचकर विरोध प्रदर्शन किया। ग्रामीणों का आरोप है कि अभी अंडर ब्रिज का कार्य पूर्ण नहीं हुआ है इसके बाद भी रेलवे विभाग ने रेलवे गेट हमेशा के लिए बंद कर दिया है। जिससे 60 से भी अधिक ग्रामों का आवागमन बाधित होगा। ग्रामीणों ने इस संबंध में रेलवे सेक्शन इंजीनियर को ज्ञापन सौंप कर कहा की पहले अंडर ब्रिज के अधूरे कार्य को पूर्ण करे उसके बाद ही रेलवे गेट हमेशा के लिए बंद करे । परमंडल के सरपंच इंद्रजीत ने बताया कि हमें आज 18 मई से गेट बंद होने की सूचना मिली थी हमने जब यहा आकर देखा तो अंडर ब्रिज का काम अधूरा है। एप्रोच रोड का कार्य पूरा नहीं

हो सका, बाउंड्री वॉल भी अधूरी है ,लाइटिंग व्यवस्था नहीं हुई है, अंडर ब्रिज में जल निकासी की व्यवस्था भी नहीं की गई है ऐसे में आनंद फानन में गेट को बंद किया जाना अनुचित है और अंडर ब्रिज निर्माण में भारी अनियमिता की गई है जिसकी जांच होनी चाहिए कंक्रीट में रेत के स्थान पर गिट्टी की बजरी मिलाई गई है। उपसरपंच गीता हारोड़े बताती है की सबसे बड़ी समस्या अप्रोच रूट की है और अंडर ब्रिज में जल निकासी की व्यवस्था नहीं है अगर भरी बरसात होती है और कोई दुर्घटना घटती है तो इसके लिए जवाबदार कौन होगा।

कच्चे रास्ते में फस जाएगे किसानों के वाहन- रेलवे इंजीनियर को सौपे ज्ञापन में कहा गया है कि अंडर ब्रिज रेलवे के अधिकारियों ने एप्रोच रोड अधूरा छोड़ दिया है। भीमराव गडेकर के घर के बाजू से लगभग 100 फीट सीमेंट रोड का निर्माण नहीं किया गया है। बारिश में किसानों को खाद बीज सहित अन्य सामग्री लेकर इस मार्ग से गुजरना होगा जो की वर्षा काल में अत्यंत कठिन होगा। इस आवेदन में मांग की गई है कि नवनिर्मित अंडर ब्रिज का कार्य पूर्ण होने के बाद ही प्रमंडल गेट क्रमांक 264 को पूर्णता बंद किया जाए। ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने वालों में राजू बनखेड़े, तुलसीदास हारोड़े, अशोक हिगवे, मुरली गडेकर, नरेंद्र कोटवार ,अखिलेश सूर्यवंशी ,लक्ष्मण सिंह गुलबाके, शैलेंद्र सोलंकी, दिनेश गडेकर आदि ।

75 दीपक प्रज्वलित कर आज मनाएंगे पूर्व विधायक स्व.विनोद कुमार डागा की 75वीं जन्म जयंती

ग्राम कोलगाँव में बड़ादेव पूजन और आरती का होगा आयोजन

बैतूल। मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व कोषाध्यक्ष एवं बैतूल के पूर्व विधायक स्व. विनोद कुमार डागा की 75वीं जन्म जयंती पर आज 19 मई 2024 रविवार को विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। उनकी जन्म जयंती के अवसर पर 19 मई रविवार को प्रातः 10.30 बजे न्यू डागा हाउस, गांधी चौक, कोठीबाजार में 75 दीपक प्रज्वलित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की जाएगी। इस अवसर पर उनके व्यक्तित्व को याद किया जाएगा।

इस दिन ग्राम कोलगांव में शाम 6 बजे बड़ादेव पूजन और आरती का आयोजन एवं आदिवासी संस्कृति का रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा, जिसमें आदिवासी समाज की समृद्ध संस्कृति के विभिन्न रंग देखने को मिलेंगे। इसके साथ ही भोजन प्रसादी का भी आयोजन होगा। इसके पश्चात शाम 7 बजे से स्व. डागा की स्मृति में चल रही क्रिकेट प्रतियोगिता का समापन समारोह भी आयोजित किया जाएगा, जिसमें विजेता टीमों को पारितोषिक वितरण किया जाएगा। इन सभी कार्यक्रमों में कोलगांव और आसपास के क्षेत्रवासियों की सहभागिता सुनिश्चित की जाएगी। आयोजकों में कोलगांव, मॅचगोहान, जसौंदी, ताम्यागढ़, घुटीगढ़, नायकचारसी, सांईखंडारा, रौधा, दीवान चारसी, बोरीकांस, बगदरी, सालार्जुन, गोराखार, सरण्डई, बडोरी, हाथीडिंगर, चारबन, घोघरी, सेलगांव, ढोढरामोहार, पिपला, मांडवा, गाड़वा, हथनाझिरी, चुरनी, बोथी सियार, सिवनपाट, बोरपानी, मूसाखेड़ी, बिजासनी, खटगढ़, निरगुड, गोंदा, पातरा, जूनावानी एवं अन्य क्षेत्रों के लोग शामिल होंगे। इस प्रकार के आयोजनों से स्व. विनोद कुमार डागा जी की स्मृतियों को संजोने और उनके द्वारा समाज के लिए किए गए कार्यों को स्मरण करने का अवसर प्राप्त होगा। यह आयोजन समाज को एकजुट करने और सामाजिक एवं सांस्कृतिक एकता को प्रोत्साहित करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

नगर पालिका ने चलाया पॉलिथीन मुक्त अभियान, पॉलीथिन जप्त कर की चालानी कार्रवाई

बैतूल / मुलताई। नगर पालिका की ओर से नगर में पॉलिथीन के खिलाफ अभियान चलाया जा रहा है। आज नगर पालिका के अमले द्वारा बस स्टैंड सहित अन्य दुकानों पर जांच की और पॉलिथीन जब्त की है। जो दुकानदार पालीथिन का इस्तेमाल कर रहे थे, उनके खिलाफ चालानी कार्रवाई भी की गई है। पिछले एक पखवाड़े से नगर पालिका नगर में लोगों को पॉलिथीन का उपयोग नहीं करने के लिए प्रेरित कर रही थी। लगातार इसके लिए गली-गली में प्रचार प्रसार भी किया जा रहा था।

इसके बाद आज नपा के अमले ने सीएमओ आरके इवनाती के नेतृत्व में कार्रवाई की है। स्वच्छता प्रभारी संतोष शिवहरे ने बताया कि आज बस स्टैंड पर कुछ होटलों से और फलों की दुकानों से लगभग 5 किलो पॉलिथीन जब्त की है। इनके खिलाफ चालानी कार्रवाई भी की गई है साथ ही इन्हें समझाइश भी दी गई है। संतोष शिवहरे ने बताया कि नष्ट न होने के कारण पॉलिथीन भूमि की उर्वरा क्षमता को खत्म कर रहा है और भूजल स्तर को घटा रहा है। इसका प्रयोग सांस और त्वचा संबंधी रोगों के साथ ही कैंसर का खतरा भी बढ़ रहा है। यह गर्भस्थ शिशु के विकास को भी रोक सकता है। पॉलिथीन को जलाने से निकलने वाला धूआ ओजोन परत को नुकसान पहुंचा रहा है जो ग्लोबल वार्मिंग का बड़ा कारण है।

पुलिस ने घेराबंदी कर पकड़ी गौवंश से भरी पी-कप, दो आरोपी भी पकड़ाए

बैतूल / मुलताई। मुखबिर की सूचना के आधार पर पुलिस ने गोवंश से भरी पिकअप को पकड़ने में सफलता प्राप्त की है। पिकअप में 9 मवेशी ठुस ठुस कर भरे गए थे। प्राप्त जानकारी के अनुसार आरोपियों बोरगांव गौना- बल्होरा मार्ग होते हुये पीकप वाहन में गौवंश भरकर महाराष्ट्र की ओर जाने वाली है, सूचना पर ग्राम गौना में वाहन की चैकिंग की गई जो 18 मई को रात्रि करीबन 12 बजे पीकप वाहन आता दिखाई दिया जिसे रूकने हेतू संकेत दिया लेकिन पीकप चालक वाहन को नही रोका और गौना जोड से बल्होरा कच्चा मार्ग पर भगाकर ले गया जिसे पीछा कर घेराबंदी कर पकडा गया ,पीकप वाहन क्रमांक MP 48 G 3268 में 09 नग गौवंश ठुस -ठुस कर क्रुरता पुर्वक भरे होना पाया गया , पीकप चालक अर्जुन उर्फ डोमा पिता धनराज साहू जाति तेली उम्र 19 साल निवासी ग्राम बोरगांव थाना मुलताई जि.बैतूल और हेल्पर लीलाधर पिता रामकिशोर साहू जाति तेली उम्र 35 साल निवासी ग्राम बिसनूर थाना मुलताई जिला बैतूल के विरूद्ध अपराध धारा 4,6,9 गौवंश वध प्रतिषेध अधि. , 11(1)(घ) पशु क्रुरता निवारण अधि. का पंजीबद्ध किया गया । आरोपीगण से गौवंश एवं पीकप को जप्त किया गया और उक्त आरोपीगण को गिरफ्तारी किया गया जिन्हे माननीय न्यायालय पेश किया जावेगा ।

उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी मुलताई निरी. राजेश सातनकर ,चौकी प्रभारी मासोद उपनिरी. बसंत अहके , सउनि. महेश धाकड, प्रआर. रामकृष्ण सिलारे आरक्षक शिवराम परते , एवं सुरक्षा समिति सदस्यों की भूमिका रही ।

हाथ ठेलों को तोड़ना, गरीब परिवार के व्यवसाय की रीढ़ तोड़ने जैसा है – पूर्व नपाध्यक्ष खंडेलवाल

नर्मदापुरम। कौन कहता है कि आसमान में सुराख नहीं होता एक पत्थर तबियत से तो उछालो यारो दुष्यंत कुमार का यह शेर दोहराते.. मानों भाजपा समर्पित वे निष्ठावान कार्यकर्ता मानवीय तौर पर अपनी ही पार्टी की परिषद के विरोध में खड़े हो गए, पूर्व नपाध्यक्ष डॉ अखिलेश खंडेलवाल सहित अखिलेश निगम, हरि सेवरिया, श्रीराम सगर, राजेन्द्र कुशवाह ने नगरपालिका के अतिक्रमण दस्ते द्वारा विगत दिनों नगर में अतिक्रमण हटाओ अभियान में नगर के विभिन्न स्थानों पर लगे हाथ ठेलों और टपों को अमानवीय तरीके से तोड़कर छोटे व्यापारियों के व्यवसाय को नष्ट कर दिया। इस अमानवीय कृत्य से दुखी हो भाजपा झुग्गी-झोपड़ी-प्रकोष्ठ द्वारा भाजपा जिलाध्यक्ष और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नाम संबोधित एक ज्ञापन भाजपा जिला कार्यालय में संभाग कार्यालय प्रमुख हंस राय को सौंपा है। झुग्गी-झोपड़ी-प्रकोष्ठ प्रदेश संयोजक डॉ.अखिलेश

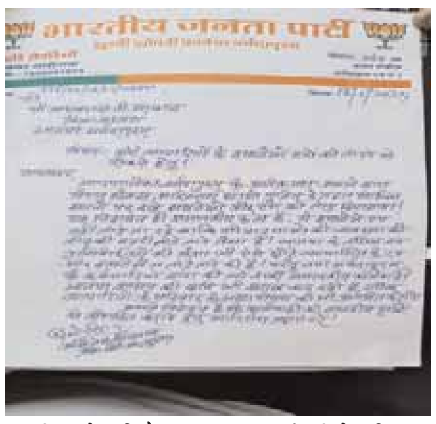

खंडेलवाल ने निवेदन किया कि यह कार्यवाही इन परिवारों की आजीविका की रीढ़ की हड्डी तोडने जैसा है। इस हाथ ठेले- टप से ही इनके परिवार की भरण पोषण की व्यवस्था होती है।अतिक्रमण हटाकर उन्हे उचित व्यवस्थापन करना शासन की व्यवस्था का अंग होना चाहिए। पूर्व मे भी शासन ने हाथ ठेले न तोड़ने का तय किया था। हम भाजपा जिलाध्यक्ष के माध्यम से अतिक्रमण कार्यवाही को मानवीय तौर पर विचार कर करने का निवेदन करते हैं, इस तरह की अमानवीय कार्यवाही से भाजपा की छवि भी प्रभावित हो रही है। अतः नपा कर्मचारियों की उक्त कार्यवाही पर रोक लगाकर हाथ ठेले तोडने पर रोक लगाई जाए। ज्ञापन देने अखिलेश निगम, हरि सेवरिया, श्रीराम सगर, राजेन्द्र कुशवाह उपस्थित रहे।

प्रभास की 'सालार 2' पर लगा ग्रहण

प्रभास की प्रशांत नील के निर्देशन में बनने वाली फिल्म 'सालार 2' को लेकर काफी लंबे वक्त से चर्चा है। इस ब्लॉकबस्टर फिल्म के दूसरे पार्ट के लिए लोग आस लगाए बैठे हैं। 'सालार 2' को लेकर लगातार दिलचस्प जानकारियां भी सामने आ रही, जिस वजह से इस फिल्म के दूसरे पार्ट को लेकर फैंस का उत्साह बना हुआ था। हालांकि, अब एक नई खबर सामने आई है। जिससे इस फिल्म के दूसरे पार्ट का इंतजार कर रहे फैंस को करारा झटका लगा। सामने आई लेटेस्ट रिपोर्ट्स की मानें तो सुपरस्टार प्रभास और निर्देशक प्रशांत नील की ये मूवी फिलहाल होल्ड पर चली गई।

मेकर्स ने इस फिल्म पर फिलहाल ब्रेक लगा दिया है। साउथ फिल्मी गलियारों से निकलकर सामने आई ताजा खबरों के मुताबिक फिल्म को फिलहाल अनिश्चितकाल के लिए होल्ड पर डाल दिया है। इसकी वजह जूनियर एनटीआर की 31 फिल्म है। जानकारी के मुताबिक फिलहाल निर्देशक प्रशांत नील 'सालार 2' पर नहीं, बल्कि जूनियर एनटीआर की 31वीं फिल्म की तैयारियों में लगे हैं। निर्माता-निर्देशक प्रशांत नील 'सालार 2' की बजाए पहले जूनियर एनटीआर की 31वीं फिल्म को पूरा करने की प्लानिंग में हैं। इसके बाद वो ही 'सालार 2' पर लौटेंगे।

फिल्म निर्देशक प्रशांत नील ने काफी पहले ही जूनियर एनटीआर संग अगली फिल्म का ऐलान कर दिया था। उस वक्त वो प्रभास की 'सालार' को पूरा करने में बिजी थे। अब जब 'सालार' रिलीज होकर हिट भी हो चुकी है। तब मेकर्स ने इसके दूसरे पार्ट को पूरा करने का फैसला किया था। अब अचानक निर्देशक का प्लान बदला है और वो 'सालार 2' की जगह जूनियर एनटीआर की अगली फिल्म को पहले पूरा करने की तैयारी कर रहे हैं। हालांकि अभी इन रिपोर्ट्स की आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। देखना दिलचस्प होगा कि प्रशांत नील पहले किस फिल्म को लेकर दर्शकों के बीच पहुंचेगे।

फिर सुपरहीरो बनकर परचम लहराएंगे ऋतिक

ऋतिक रोशन की फिल्म 'फाइटर' इसी साल बड़े पर्दे पर रिलीज हुई थी। मूवी में दीपिका पादुकोण भी लीड रोल में थी। इस फिल्म में ऋतिक रोशन ने दुश्मन देश को धूल चटा दी। इस मूवी को लोगों ने काफी तगड़ा रिस्पॉन्स दिया, जिस वजह से ये बॉक्स ऑफिस पर सुपरहिट साबित हुई। इस बीच ऋतिक रोशन की अपकमिंग फिल्म 'कृष-4' को लेकर एक अपडेट सामने आया। जाने-माने डायरेक्टर सिद्धार्थ आनंद ने फिल्म 'कृष-4' को लेकर बड़ा अपडेट दे दिया है।

ऋतिक रोशन की कृष-4 की चर्चा शुरू हो गई है। इस फिल्म को लेकर सिद्धार्थ आनंद ने अपनी चुप्पी तोड़ी है। जैसे ही सोशल मीडिया पर कृष-4 को लेकर खबरें वायरल हुई, वैसे ही डायरेक्टर सिद्धार्थ आनंद ने इसपर रिएक्ट करके कहा कि हां वो आ रहे हैं। लोग अभी से ही ये चर्चा करने लगे हैं कि बॉक्स ऑफिस पर ऋतिक रोशन की फिल्म कृष 4 धमाल मचाने वाली है। ऋतिक रोशन इन दिनों वॉर की शूटिंग कर रहे हैं।

इस फिल्म में साउथ के स्टार एक्टर जूनियर एनटीआर भी दिखाई देंगे। इस मूवी का अच्छा खासा बज बना हुआ है। इस फिल्म के लिए फैंस बेहद एक्साइटेड हैं। मालूम हो कि 'वॉर-2' के पहले पार्ट में ऋतिक के साथ टाइगर श्रॉफ ने धमाल मचाया था। इस मूवी ने बॉक्स ऑफिस पर सारे रिकॉर्ड तोड़ डाले थे। ऋतिक और जूनियर एनटीआर को जोड़ी को लोग कितना प्यार देते हैं।

जैकी श्रॉफ ने खटखटाया कोर्ट का दरवाजा, शमिता शेट्टी को हुई ये बीमारी

जैकी श्रॉफ ने अपने पर्सनैलिटी राइट्स की सुरक्षा के लिए दिल्ली हाई कोर्ट पहुंचे हैं। जैकी श्रॉफ का कहना है कि उनकी सहमति के बिना उनके नाम, फोटो, आवाज और 'भिड़ू' का इस्तेमाल न किया जाए। बॉलीवुड के

वेटरन एक्टर जैकी श्रॉफ ने अपने पर्सनैलिटी राइट्स की सुरक्षा के लिए दिल्ली हाई कोर्ट पहुंचे हैं। जैकी श्रॉफ का कहना है कि उनकी सहमति के बिना उनके नाम, फोटो, आवाज और भिड़ू का इस्तेमाल ना किया जाए। जैकी श्रॉफ ने ये सब इस्तेमाल करने वाले तमाम सस्थाओं के खिलाफ मुकदमा दायर किया है। इस मामले की सुनवाई 15 मई को हुई।

सैफ और करीना के तलाक की अटकलें

इंडस्ट्री के पॉपुलर कपल्स में से एक सैफ अली खान और करीना कपूर खान अक्सर एक साथ नजर आते हैं। उनके बीच काफी प्यार देखने को मिलता है। सैफ अली खान और करीना कपूर खान का हाल ही में एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था जिसमें दोनों अपनी बिल्डिंग के नीचे लिपलॉक करते नजर आए। हालांकि, इस वीडियो को लेकर सैफ अली खान और करीना कपूर खान को ट्रोल किया गया है। इसी बीच कुछ ऐसा हुआ है कि सोशल मीडिया पर सैफ अली खान और करीना कपूर खान की तलाक की बातें हो रही हैं।

सैफ अली खान की उनकी पत्नी करीना कपूर खान से तलाक की अटकलें लगने लगीं। दरअसल, सैफ अली खान हाल ही में एयरपोर्ट पर स्पॉट हुए थे और कैमरे में कैद हुए। सैफ अली खान की तस्वीरें और वीडियो सामने आने के बाद लोगों का उनके हाथ पर बने टैटू पर ध्यान गया। सैफ अली खान के हाथ पर पहले उनकी पत्नी करीना का नाम लिखा था लेकिन अब वहां पर दूसरा टैटू बन चुका है। टैटू बदला हुआ देखने के बाद लोगों ने कमेंट करना शुरू कर दिया है कि सैफ अली खान और करीना कपूर खान का तलाक होने वाला है।

एक यूजर ने लिखा है, 'एक और शादी की तैयारी।' एक यूजर ने लिखा है, 'तीसरी बेगम की लाने की तैयारी में सैफ।' एक यूजर ने लिखा है, 'तलाक होगा पक्का।' एक यूजर ने लिखा है, 'अभी टैटू बदला है अब घरवाली बदलेगा।' एक यूजर ने लिखा है, 'कुछ दिनों रुको बीवी भी बदल जाएगा।' एक यूजर ने लिखा है, 'सैफ हैट्रिक मारने की तैयारी में हैं।'

सैफ अली खान और करीना कपूर ने साल 2012 में शादी की थी। इस कपल के दो बेटे तैमूर अली खान और जेह अली खान हैं। बताते चलें कि सैफ अली खान ने करीना कपूर से पहले अमृता सिंह के साथ शादी की थी और दोनों के एक बेटी सारा अली खान और एक बेटा इब्राहिम अली खान हैं। सैफ अली खान और अमृता सिंह का तलाक हो चुका है।

रियल बॉक्स

नाम से ज्यादा चर्चित है इनके 'निक नेम'

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

फिल्मों में कलाकारों के नाम का बहुत महत्व है। इतना ज्यादा कि कई कलाकारों ने इंडस्ट्री में आकर अपने नाम बदले। फिल्म इंडस्ट्री में नाम बदलने का चलन बरसों पुराना है। बहुत से कलाकार ने अपना नाम बदलकर ही दर्शकों के दिलों पर राज किया। युसूफ खान दिलीप कुमार बन गए, रणवीर नाथ कपूर ने अपना नाम राज कपूर रख लिया, जतिन खन्ना ने नाम बदलकर राजेश खन्ना रख लिया और राजीव भाटिया अक्षय कुमार बन गए। सिर्फ नायकों ने ही नहीं नायिकाओं ने भी अपने नाम बदले। महजबीं बानो ने अपना नाम मीना कुमारी रख लिया। आज की नायिका कियारा आडवाणी का भी असली नाम आलिया आडवाणी है। लेकिन, इनके असली या बदले नाम से ज्यादा चर्चित हैं कलाकारों के 'निक नेम' यानी जिनकी वजह से उनकी पहचान है। कलाकारों को ये नाम धीरे-धीरे ये नाम नाम इतने फैमस हो गए कि कलाकारों की पहचान बन गए। सौ से पुरानी फ़िल्मी दुनिया में नाम बदलने और निक नेम से चर्चित होने का चलन बहुत पुराना है। पहले भी कलाकारों को उनकी अदाकारी के मुताबिक नाम के साथ निक नेम का तमगा मिलता था, आज भी वही होता है!

आज यदि सिर्फ 'टाइगर' कहा जाए तो लोग समझ जाएंगे कि बात सलमान खान की हो रही है। 'बाबा' बोलते ही दिमाग में संजय दत्त की छवि उभरती है और 'खिलाड़ी' यानी अक्षय कुमार! ये चलन आजकल का नहीं, दशकों पुराना है। ये नाम कब और कहां से आए, इसकी जानकारी कम ही मिलती है! लेकिन, दर्शकों या मीडिया जनित यह नाम इतने मशहूर हुए कि इनका जिक्र आते ही उस सितारे की छवि सामने आ जाती है। 'झकास' कहते ही अनिल कपूर की मुद्रा सामने आ जाती है और 'मिस्टर परफेक्शनिस्ट का जिक्र आते ही समझ आता है कि बात आमिर खान की हो रही है। कलाकरों को इस तरह के टाइटल दिए जाने का सिलसिला उतना ही पुराना है, जितना सितारों से जुड़ा उनका स्टारडम!

जब देव आनंद दिलीप कुमार और राजकपूर की तिकड़ी परदे पर राज किया करती थी। इन तीनों सितारों को एक-एक नाम मिला था, जो इनके पर्दे वाले नाम से भले ही अलग था लेकिन इनकी छबि पर एकदम फिट बैठता था। दिलीप कुमार ने अपनी अदाकारी से पर्दे पर इतने आंसू उड़ेंगे कि उन्हें 'ट्रेजेडी किंग' कहा जाने लगा। उन्हीं की तरह पर्दे पर हमेशा अपने आसूंओ से सैलाब लाने वाली मीना कुमारी को 'ट्रेजेडी क्वीन' कहा गया! ये बात अलग है कि जब भी दिलीप कुमार और मीना कुमारी साथ आए तो परदे पर ट्रेजेडी नहीं कॉमेडी का झरना बहा। कोहिनूर, आजाद और यहूदी में दोनों साथ थे, पर तीनों फिल्मों में एक बूंद आंसू तक नहीं बहा! मुस्कुराते चेहरे वाली मधुबाला को आज भी बॉलीवुड की 'मोनालिसा' कहा जाता है। देव आनंद ने आजीवन हीरो की भूमिका निभाई, तो उन्हें 'एवरग्रीन' कहा गया! अपनी फिल्मों में भव्यता दिखाने वाले राज कपूर 'ग्रेट शोमैन' कहलाए! बाद में यह तमगा सुभाष घई ने जरूर लगाना चाहा, लेकिन वे 'शौमेन' तक ही सीमित रहे 'ग्रेट' नहीं बन पाए।

इनसे पहले अशोक कुमार का जलवा था, उन्हें 'दादा मुनि' कहा जाता रहा। पृथ्वीराज कपूर तो अकबर का किरदार निभाने के बाद भी 'पापाजी' ही कहलाए! साठ के उत्तरार्ध में धर्मेन्द्र, राजेन्द्र कुमार, मनोज कुमार शम्मी कपूर, जितेन्द्र आए। धर्मेन्द्र को 'पत्थर के फूल' के बाद 'ही-मैन' की उपाधि मिली। राजेन्द्र कुमार एक के बाद एक हिट फिल्में देकर 'जुबली कुमार' बने। शम्मीकपूर को 'बागी' कहा गया तो जीतेन्द्र 'जम्पिग जैक' कहलाए। इन्हीं के समकालीन मनोज कुमार ने सेल्युलाइड को देशभक्ति की चासनी में इतना डुबोया कि उन्हें 'भारत कुमार' कहा जाने लगा। इसके बाद दौर आया राजेश खन्ना, अमिताभ, मिथुन चक्रवर्ती का। एक के बाद एक 16 गोल्डन जुबली फ़िल्में देने वाले राजेश खन्ना बॉलीवुड के पहले 'सुपर स्टार' बने। अमिताभ बच्चन को सलीम-जावेद की 'जंजीर' ने 'एंग्री यंग मैन' का तमगा दिला दिया। डिस्को डांस करके 'डिस्को डांसर' की उपाधि पाने वाले मिथुन को दो नाम मिले। उन्हें गरीबों का अमिताभ बच्चन भी कहा जाता था। उनके साथ आए शत्रुघ्न को 'शॉटगन' का नाम मिला तो विनोद खन्ना को 'डेशिंग' का! इमरान हाशमी को उनकी भूमिकाओं की वजह से 'सीरियल किसर' कहा गया तो रणबीर कपूर को 'डेबोनियर।'

खिताबों का सिलसिला केवल नायकों तक ही सीमित नहीं रहा। नूतन ने 'दिल्ली का ठग' में बिकनी पहनकर पहली 'बिकनी गर्ल' का दर्जा पाया, तो अपने दमदार प्रदर्शन के कारण नादिया बनी हंटरवाली।' हेलन 'डांसिंग डॉल' बनी तो नीलम 'बेबी डॉल।' हेमा मालिनी आज भी 'ड्रीम गर्ल' ही कहलाती है, तो श्रीदेवी को 'हवा हवाई' और विद्या बालन को 'एंटरटेनमेंट गर्ल' कहा जाता है। 'कश्मीर की कली' की नायिका शर्मिला 'डिम्पल गर्ल' कहलाई। अपने दमदार अभिनय से लेकर अपने विवादों तक के लिए सुर्खियां बटोरने वाले संजय दत्त की पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ हमेशा चर्चा में रही। फैंस ने संजय दत्त को संजू बाबा, बाबा और 'खलनायक' जैसे नामों से नवाजा है। इन्हीं में एक नाम 'संजू बाबा' पर तो उनकी बायोपिक भी बनी। दर्शकों और फैंस में सलमान खान ही क्रेज है। एक्शन और रोमांस के जोड़ से दिलों में जगह बनाने वाले सलमान खान का असल नाम तो बस बैनर और पोस्टर पर ही रहा, उनको तो 'सल्लू भाई' और 'भाईजान' जैसे नाम से ज्यादा जाना जाता है।

अपने ज़माने के विख्यात अभिनेता दिलीप कुमार आज दुनिया में नहीं रहे हैं, लेकिन उनके किरदार आज भी दिलों में जिंदा हैं। मुगल-ए-आजम, सौदागर, क्रांति और 'देवदास' जैसी फिल्मों में काम करने वाले दिलीप कुमार को 'ट्रेजडी किंग' नाम दिया गया था। इसी तरह मनोज कुमार का वैसे तो असल नाम हरिकिशन गिरि गोस्वामी है, पर सिनेमा से प्रभावित होकर अपना नाम बदल लिया था। शहीद', क्रांति और 'पूरब-पश्चिम' जैसी देशभक्ति प्रधान फिल्मों की वजह से मनोज कुमार को 'भारत कुमार' कहा जाता रहा। अमिताभ बच्चन को उनके चाहने वाले कई नाम से पहचानते हैं। उन्हें 'सदी का महानायक' और 'शहंशाह' कहा जाता है। उन्हें 'बिग-बी' कहने वाले भी कम नहीं हैं। लेकिन, फिल्मों में अपने दमदार अभिनय और एक्शन के चलते अमिताभ बच्चन को 'एंग्री यंग मैन' का टाइटल मिला। धर्मेंद्र अपनी दमदार बॉडी और एक्शन के लिए मशहूर रहे हैं। उन्हें भी 'ही-मैन' नाम से ज्यादा पुकारा जाता है। इंडस्ट्री में रोमांस की नई परिभाषा लिखने वाले शाहरुख खान को किंग खान, बादशाह और 'किंग ऑफ रोमांस' जैसे नाम से नवाजा गया। आमिर खान को दर्शक उनकी फिल्मों में परफेक्शन के लिए जानते हैं। कहा जाता है कि वे अपने किरदार को निभाने के लिए किसी भी हद तक गुजर जाते हैं। वजन बढ़ाना हो या फिर सिर मुंडवाना हो आमिर सबके लिए तैयार रहते हैं। उनकी इसी खासियत की वजह से उन्हें 'मिस्टर परफेक्शनिस्ट' नाम दिया गया। अक्षय कुमार को उनके जबरदस्त स्टंट और खिलाड़ी सीरीज की फिल्में करने की वजह से 'खिलाड़ी कुमार' का नाम दिया गया।

ये चलन सिर्फ नायकों तक ही सीमित नहीं रहा। 70 के दशक में जब हेमा मालिनी इंडस्ट्री में आई तो अपनी खूबसूरती और डांसिंग स्किल्स की वजह से सुर्खियां बटोरी। दर्शकों ने प्यार से उन्हें 'ड्रीम गर्ल' पुकारा। बाद में इसी नाम से 1977 में उनकी एक फिल्म भी आई। मीना कुमारी को 'ट्रेजेडी क्वीन' कहा गया तो माधुरी दीक्षित उन अभिनेत्रियों में शामिल हैं, जिनके नाम से ही फिल्में हिट हो जाती थीं। उनका डांस भी लोगों को हैरानी में डाल देता था। माधुरी जितनी कमाल की एक्ट्रेस हैं उतना ही शानदार डांस करती हैं। माधुरी को उनके डांस 'धक-धक करने लगा' की वजह से 'धक-धक गर्ल' और शानदार डांस की वजह से 'डांसिंग दीवा' नाम दिया गया। आज प्रियंका चोपड़ा ग्लोबल आइकॉन बन चुकी हैं। लेकिन, 'दोस्ताना' फिल्म के गाने 'देसी गर्ल' के बाद से ही अभिनेत्री को फैंस 'देसी गर्ल' बुलाया जाने लगा। बात सिर्फ यहीं तक सीमित नहीं है। परदे के पीछे रहने वालों में मोहम्मद रफी 'आवाज के शहंशाह' कहलाए तो तलत महमूद 'गजलों के बादशाह।' नामों का यह सिलसिला कल भी प्रचलित था, आज भी है और उम्मीद है कि आगे भी कलाकार नए-नए नामों से पुकारे जाते रहेंगे। क्योंकि, जब तक मनोरंजन की दुनिया है, कलाकार भी रहेंगे और अदाकारी से साथ उनके नाम भी।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

प्रशंसा और आलोचना के झूले पर झूलती 'हीरामंडी'

अशोक जोशी

1940 के समय काल के दौरान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इर्द-गिर्द बुनी गई हीरामंडी में संजय लीला भंसाली ने प्यार, शक्ति, बदले और आजादी की खोज के चौरंगी कथानकों को शामिल कर इसे चतुर्कोणी बना दिया है। लाइट और

शेड के अपने चिरपरिचित उपयोग के साथ हीरामंडी दिन ढलने की थकान और रात के शबाब चढने की ताजगी का मिला-जुला रंग प्रस्तुत करने में भी संजय भंसाली कामयाब हुए। हीरामंडी को कलम से उतरकर छोटे परदे तक आने में 14 साल लग गए तो इसे भी एक लम्बा काल माना जाएगा।

संजय लीला भंसाली ने नेटफ्लिक्स पर इस माह हीरामंडी को भव्यता के साथ प्रस्तुत कर ओटीटी को मालामाल कर दिया है। इससे पहले ओटीटी पर जस तरह के सीरियल दिखाए जाते थे, उनसे यही दिखाई देता था कि अभी भी ओटीटी सिनेमा के मुकाबले कमजोर ही है। लेकिन संजय भंसाली ने इस भ्रम को तोड़ा है। उन्होंने हीरामंडी को ओटीटी का मुगले-आजम बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इस लिहाज से वह ओटीटी के के आसिफ बन गए हैं जिन्होने अपनी प्रस्तुति के लिए अपनी जेब से किसी तरह का समझौता नहीं किया है।

मनीषा कोइराला, अदिति राव हैदरी, ऋचा चड्ढा, सोनाक्षी सिन्हा, शर्मिन सहगल और संजीदा शेख की उपस्थिति वाले इस सीरियल ने प्रदर्शन पूर्व जिस तरह की हवा बनाई थी, प्रदर्शन के बाद अपना चिर परिचत विवाद भी इसमें जोड़ दिया। इस वेब सीरीज को देखने वालों में एनडीए और इंडी गठबंधन की तरह दो गुट बन गए। एक गुट इसकी तारीफ में कसीदे पढ़ रहा है. तो दूसरा गुट इसकी खाल खिंचने में लगा है कि संजय भंसाली ने अपनी आदत से मजबूर होकर इस संकरी सी बदनाम बस्ती को कोठे से कोसो दूर ले जाकर महलों में बदलने की कोशिश की है।

यह बात तो तय है कि जिसने भी छोटे परदे पर इस शाहकार का दीदार किया है , उसकी आंखें निश्चित ही चौंध गई होगी। इसकी दर्शनीयता दर्शकों को निश्चित ही चौंकाती है । यदि ओटीटी पर इसकी भव्यता प्रशंसनीय है तो यदि इसे सिनेमास्कोप के चौड़े पर्दे पर प्रस्तुत किया जाता, तो सिनेमा हाल में इसका प्रभाव कितना भव्य होगा। ओटीटी की मुगले-आजम मानी जा सकने वाली इस सीरीज और

अनारकली की भव्य प्रस्तुति परदे पर पेश करने वाली मुगले-आजम में एक और साम्यता है कि दोनों को आकार लेकर दर्शकों के सामने आने में एक से ज्यादा दशक का समय लगा।

मुगले-आजम की परिकल्पना से लेकर के आसिफ के ख्वाब की ताबीर होने में लगभग 18 साल का समय लग गया था। तब जमाने की रफ्तार कुछ सुस्त थी। जिस काल में संजय लीला भंसाली ने हीरामंडी की परिकल्पना की, जमाने को पंख लगने आरंभ हो गए थे। आज तकनीक ने सिनेमा के माध्यम को गति के साथ सपने को साकार करने के टूल्स मुहैया करवा दिए है। ऐसी स्थिति में हीरामंडी को कलम से उतरकर छोटे परदे तक आने में 14 साल लग गए तो इसे भी एक लम्बा काल माना जाएगा।

यदि समय काल और वेशभूषा को छोड़ दिया जाए तो संजय लीला भंसाली ने इसे अपना विशिष्ट टच देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। 1940 के दौरान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इर्द-गिर्द बुनी गई हीरामंडी में भंसाली ने प्यार, शक्ति, बदले और आजादी की खोज के चौरंगी कथानकों को शामिल कर इसे चतुर्कोणी बना दिया है। फिल्म के लिए पहले रेखा का नाम तय किया गया था। लेकिन, भंसाली और रेखा दोनो के मिजाज नहीं मिल पाने से बात नहीं बनी और उन्हें अपनी फिल्म खामोशी की नायिका मनीषा कोइराला को सिने हाइबरनेशन से जगाना पडा। अपनी चमक खो चुकी सोनाक्षी को भंसाली ने फिर से तपा कर सोना बनाने की कोशिश की है। अदिति राव हैदरी निश्चित ही सरप्राइजिंग पेशकश है और ऋचा चड्ढा से भी उन्होंने आशातीत सफलतापूर्वक काम ले लिया।

लाईट और शेड के अपने चिरपरिचित उपयोग के साथ हीरामंडी दिन ढलने की थकान और रात के शबाब चढने की ताजगी का मिला-जुला रंग प्रस्तुत करने में भी संजय भंसाली कामयाब हुए। कथोपकथन के अंदाज में उन्होंने दक्षिण एशिया के नजरअंदाज किए गए इतिहास को खोदकर निकालने का प्रयास किया है। उनका ध्यान भी इसी पर रहा है कि भुला दिए गए इतिहास की नब्ज टटोल कर एक नया इतिहास लिखा जाए जो आज की पीढ़ी के लिए लगभग अनजान सा है। एक बात समझ से परे है कि संजय भंसाली ने हीरामंडी का अनुवाद डायमंड मार्केट क्यों किया? जबकि, इसका जवाहरात वाले हीरे से कोई संबंध नहीं है। 17वीं सदी के राजा रणजीत सिंह के मंत्री हीरा सिंह ने यहां अनाज मार्केट बनाया था। हालांकि, कुछ साक्ष्य मिलते हैं कि ये मुगल काल से मौजूद थी और यहां 15वीं और 17वीं सदी के दौरान मुगलों द्वारा अफगानिस्तान और ईरान से महिलाओं को लाया गया था, जो मनोरंजन के लिए नृत्य और संगीत का सहारा लेती थीं। इसके बाद भारतीय महाद्वीप के कई हिस्सों से महिलाएं यहां आकर बसने लगीं और कथक जैसे क्लासिकल डांस होने लगे।

ब्रिटिश राज में हीरा मंडी की स्थिति को और भी मजबूत किया गया। तब ये लाहौर में देह व्यापार के लिए प्रसिद्ध रही। इस जगह पर अभी भी अफगानिस्तान से आई हुई रिफ्यूजी महिलाएं रहती हैं और अब ये जगह काफी चर्चित होती जा रही है। संजय भंसाली ने इसे अब और चर्चित बना दिया। कुछ लोग इसे मुगले-आज़म और पाकीजा का हाइब्रिड भी मान रहे हैं। लेकिन यदि इस चश्मे को उतारकर एक दर्शक की नजर से हीरामंडी को देखा जाए तो यह अंधेरे और उजाले के बीच संगीत की स्वर लहरियां पर मंद मंद थिरकता एक ऐसा मंजर है जिसकी एक अलग पहचान है जिस पर गुरुदत्त और श्याम बेनेगल का सिनेमा झांकता दिखाई देता है।

मंगल के लिए सूत्र की तलाश में!

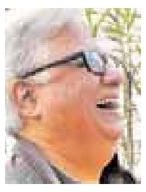

प्रकाश पुरोहित

क्यों जी, ये मंगलसूत्र क्या होता है?'

पटेल के खेत में बेगारी कर रही कमली ने पति रामखिलावन से पूछा। वह भी सोच में पड़ गया। रामखिलावन उस समय यह सोच रहा था कि चुनाव निपट जाएं तो मनरेगा का काम शुरू हो। कुछ दिन ही सही, ठीक से मजदूरी तो मिल जाएगी, बारिश से बचने के लिए झोपड़ी छवाने के काम आ जाएगी, नहीं तो पूरी रात बैठे ही गुजारनी होगी बच्चों को!

'मंगल... सूत्र...! देखा तो नहीं है, कुछ अच्छा ही होता होगा। जो भी हमारे पास नहीं है, वह अच्छा ही तो होता है।' रामखिलावन ने खोपड़ी खुजाते हुए कहा।

'कहीं ऐसा तो नहीं... जो तुमने छिपा कर रखा हो?' रामखिलावन ने पूछा!

'झोपड़ी में पैर सिकोड़ कर तो सोते हैं, छिपाने की जगह ही कहां है?' कमली चिढ़ गई!

'लगता है ये चीज सभी के पास होती हैं, तभी तो कह रहे हैं कि कांग्रेस आ गई तो छीन कर मुसलमानों को दे देगी?' कमली ने जब से सुना है परेशान है कि पहले ही घर में गिनी-चुनी तो चीजें हैं, हर रोज आस-पड़ौस से कुछ मांगना ही होता है और ऊपर से ये मंगलसूत्र। एक बार पता चल जाए कि ये क्या है तो निरात हो जाए, उनके काम की है तो अपन ही दे दें, वैसे भी अपने किस काम की। जब पता ही नहीं है कि क्या है?

'अगर अपने काम की चीज है तो दूसरा कोई लेगा क्यों...? और इतनी ही जरूरी चीज थी तो अब तक ले क्यों नहीं ली, मेरी तो यही समझ में नहीं आ रहा है।' रामखिलावन भी परेशान तो था, मगर जाहिर नहीं कर रहा था।

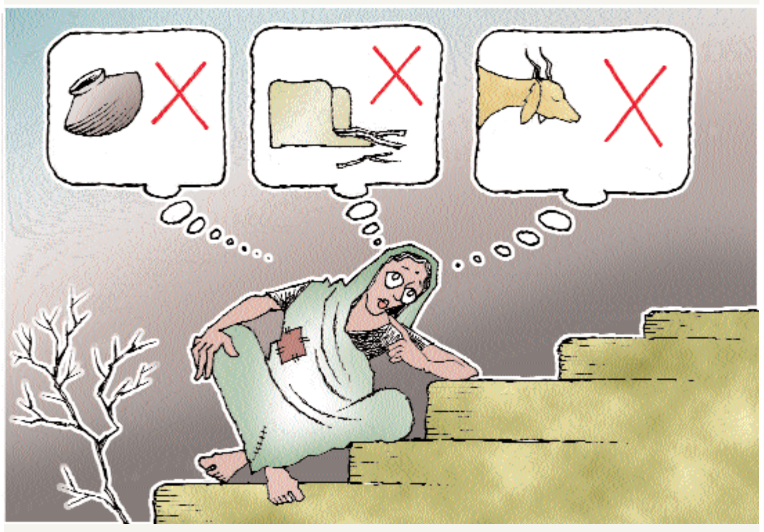

कमली सोचने लगी, कैसा होता होगा मंगलसूत्र! क्या पटेल के बैलों के गले में बंधी घंटी जैसा या फिर पटेलों की हवेली में बजते टीवी जैसा। पहले तो कमली ने अपने घर की चीजों के बारे में सोचा कि बकरी तो हो नहीं सकती। चूल्हा भी कैसे हो सकता है! मिट्टी का घड़ा, नहीं-नहीं, मंगलसूत्र कैसे हो सकता है। फिर मान भी लें कि ये ही मंगलसूत्र है तो सरकार इसे छीन कर किसी और को क्यों दे देगी और कोई पुराने, हमारे हाथ लगे मटके को लेगा भी तो क्यों। जब से यह सुना है कि हिंदुओं से मंगलसूत्र लेकर कांग्रेस किसी और को बांट देगी, तभी से कमली परेशान है। यह बात प्रधानमंत्री ने कही है तो झूट भी नहीं हो सकती... कि इतने बड़े आदमी भी कहीं झूट बोलते हैं भला! वैसे कमली आदिवासी है, लेकिन कुछ दिनों पहले रामजी का फोटू देने आए कुछ तिलकधारियों और भगवा कपड़े वालों ने उन्हें बताया था कि सरकार ने तुम्हारी सदियों पुरानी मांग पूरी कर दी है और तुम्हे हिंदू बना दिया है, इसलिए आगे से अपने को आदिवासी या कुछ और नहीं, हिंदू ही बताना। पटेल ने बुरा माना था कि अगर ये हिंदू तो फिर हम क्या! लेकिन उन लोगों ने पटेल को ना जाने क्या (ज्ञान) दिया कि वो भी मान गए। पटेल तो अब चुनाव लड़ रहे हैं और समझाते हैं कि गर्व से कहना 'हम हिंदू हैं।' कमली सोचती है, जब हिंदू नहीं थे तब ही ये मंगलसूत्र वाली बात हो जाती तो आज इतना परेशान तो नहीं होना पड़ता। हिंदू बनाने वाले तो अग्गे गए, अब किससे पूछें कि ये मंगलसूत्र क्या होता है और हिंदुओं से क्यों छीन लिया जाएगा!

कमली को यह बात भी परेशान कर रही है कि मंगलसूत्र में ऐसा क्या है, जो मुस्लिमों को दे दिया जाएगा! क्या इनका ही था, जो इस सरकार ने छीन कर हिंदुओं को दे दिया है और अब नई कांग्रेस आएगी तो उनकी चीज, उनको वापस कर देगी! फिर तो ये खेल कभी खत्म ही नहीं होगा कि हर बार नई सरकार और हर बार इसका मंगलसूत्र उसको। अगर ये मंगलसूत्र सभी के लिए इतना ही जरूरी है कि सरकार को इतनी जहमत उठानी पड़ रही है तो फिर क्या मुफ्त अनाज के बजाय एक बार सिर्फ मंगलसूत्र ही बांट दे, ताकि हमेशा का झंझट ही खत्म हो जाए। वैसे भी एक-दो दिन भूखे रहने की आदत तो सभी को है गांव में, कम से कम यह तो पता चल ही जाएगा कि ये मंगलसूत्र है क्या बला। कमली को डर यह भी है कि वोट की ही तरह कुछ हुआ मंगलसूत्र तो क्या होगा। जो हमारे पास है भी और नहीं भी कि पटेल के कहने पर ही वोट डालने नहीं जाते हैं कि कहां जाओगे इतनी धूप में इतनी दूर, हमने तुम्हारे बदले डलवा दिया है, खुश हो जाओ, जाओ खेत में काम करो।

जिसके पास जितना कम होता है, उतना ही डरता है, कमली को मंगलसूत्र देने में कोई तकलीफ नहीं है, मगर पहले कोई यह तो बताए कि उसके पास ये है भी या नहीं, वरना मालूम पड़ा 'काजीजी दुबले क्यों, तो सहर का अंदेशा।' वह मन ही मन घर की चीजों को एक-एक कर याद करती है और खुद ही कट्टस का निशान लगाती चलती है। उसे तो मंगलसूत्र जैसा कुछ नजर नहीं आता। फिर सोचा, वोट भी कहां नजर आता है, वह भी पटेल तो ले ही लेता है ना! यह सोचकर कमली और भी घबरा गई कि ऐसी कौन-सी चीज होगी, जो हमारे और मुस्लिमों के लिए समान काम की है। वैसे उसे यह अच्छा भी लग रहा था कि मंगलसूत्र भी भूख जैसी ही कोई चीज है, जिसकी दोनों तरफ चिंता है।

तभी कमली के मन में विचार आया... मान लें हमारा मंगलसूत्र, करीमुद्दीन की घरवाली को दे दिया तो क्या वो ले लेगी? उसके यहां आटा नहीं होता है तो हमारे यहां से जाता है और हमें दूध चाहिए तो उसके घर से मिल जाता है। जब हम आपस में ही पड़ौसी धर्म निभा लेते हैं तो सरकार को क्या पड़ी है कि हमसे छीन कर उसे दे। और अगर मंगलसूत्र जैसा कुछ है हमारे घर में तो करीमुद्दीन की दुल्हन तो आती-जाती है, कभी भी मांग लेती, हम क्या इंकार कर देते? शादी में पहनने के लिए चांदी की पायजेब ले गई थी या नहीं! कमली को सरकार से डर लग रहा था, जो अब खत्म हो गया कि पड़ौसी उसके ऐसे नहीं हैं। हां, उसे यह तलब जरूर है कि कोई तो बता दे ये कमबख्त मंगलसूत्र है किस बला का नाम, और खेत में पसीना पौंछते हुए कमली मुस्कराने लगी!

हर स्त्री के लिए जरूरी एक बात

सेहत

दिव्या रंजना पाण्डेय

लेखिका डॉक्टर हैं।

ज्यादा दिन पुरानी बात नहीं है। बीते सप्ताह की ही बात है। जहां भी नज़र दौड़ाई, सब जगह इश्तहार था मदर्स-डे का। एक दिन का उत्सव देख सवाल उठे, क्या मां की ममता-करुणा-त्याग का मोल मात्र एक दिवसीय शुभकामनाएं हो सकती हैं? क्या हमें साल में सिर्फ़ एक दिन के महिमा-मण्डन से संतुष्ट हो, उसी यशगान को गाते-गुनगुनाते अपनी सभी परेशानियाँ ताक पर रख देनी चाहिए?

नहीं, मुझे पता है कि सिर्फ़ शुभकामनाओं और यशगान से काम नहीं चलने वाला।

फिर मातृशक्तिज्.नारीवाद?

नहीं, इस बारे में भी नहीं

मुझे आपसे कुछ ठोस बात कहनी है।

स्तन-रोग-निदान चिकित्सा से जुड़े होने के नाते आये दिन बहुत-सी माताएं स्तन में गांठ और उससे सम्बंधित परेशानियों के साथ मुझ तक पहुंचती हैं द्ध

कल ही एक माता जो बायें स्तन में गठान के साथ आयीं थीं, जाँच और इलाज़ बताने पर कहने लगीं, पर मैडम, बिना सुई की जाँच के काम नहीं चल सकता क्या? इसमें तो बहुत दर्द होता होगा! मैं तो आज से पहले कभी अस्पताल तक नहीं आई थी, मैडम। बहुत डर लगता है बाओप्सी में तो दर्द से जान निकल जाएगी, चाहें आप सुन्न करने की तसल्ली दो, तो भी हिम्मत नहीं मेरी। मैं इस सहमति-पत्र पर साइन नहीं कर सकती। सॉरी मैडमजी!

आप ही ने तो कहा था कि गठान छोटे नींबू जितनी बड़ी है बस फिर इलाज में ऑपरेशन, कीमोथेरेपी, सिकाई... इन सब की ज़रुरत क्यों पड़ेगी? मेरे पड़ोस वाली एक औरत ने भी बच्चेदानी के कैंसर का इलाज करवाया था बेचारी निढ़ाल हो गयी कमजोरी से, बाल भी सारे चले गये उसके। औरत की कहाँ बची वो, मर्द हो गयी। गांव में एक देसी डॉक्टर इन गाँठों के घुलने की दवा देता है, मैडम मेरा तो मन वही इलाज चलाने का है

ये सब डर-चिंताएं माताओं पर इस तरह हावी रहते हैं कि कइयों बार हमारा लाख समझाना-बुझाना भी नाकाफ़ी होता है

और हम इतनी मशक़्क़त करते क्यों हैं?

तो बात ऐसी है कि स्तन-कैंसर ने पहले दुनिया और अब

हिंदुस्तान में भी उसके सबसे जानलेवा कैंसर का ख़िताब हासिल कर लिया है

यूँ तो मेडिकल साइंस स्तन-कैंसर को अमूमन आसान पकड़, पहचान और बेहतर इलाज़ के चलते बाक़ी सभी कैंसर्स की तुलना में निहायती शरीफ़ किस्म का मानता है

लेकिन बिना सावधानी, जागरूकता और इच्छाशक्ति के नहीं, बिलकुल नहीं।

ख़ासकर तब, जब आज भी हमारे समाज में स्तन से जुड़ी किसी भी परेशानी को छुपाने, न दिखाने की परिपाटी चली आ रही हो स्तनपाइयों में पाई जाने वाली यह पोषक ग्रन्थि भी शरीर के बाक़ी अंगों के समान ही रोगों का घर बनने की सम्भावना रखती है ।

बल्कि अपनी संरचना और हॉर्मोन्स का पसंदीदा प्ले-ग्राउंड होने की वज़ह से इसे ख़तरा कहीं ज़्यादा है ।

ऐसे में ज़रुरत है आपको कुण्ठा से बाहर आने की, नियमित ब्रैस्ट-सैल्फ-एग्जामिनेशन करने की।

तकलीफ़ महसूस होने पर उसे कहने-बताने की।

हो सकता है कि आपका परिवार आपकी परेशानी को तरजीह न दे, आपको उपेक्षा मिले।

लेकिन आपको समझौता नहीं करना है।

ऐसे रिश्तों से जो ज़रूरत पड़ने पर घर से अस्पताल तक का रास्ता न तय कर पाये, आपको उन्हें पीछे छोड़ना होना,अस्पताल पहुँचना होगा ।

अपने गाँव, कस्बे या जिले में विशेषज्ञ न मिलने पर उनतक उनके शहर पहुंचना होगा।

ब्रेस्ट-अल्ट्रासाउण्ड, मैमोग्राफी , बाओप्सी, इलाज के डर के आगे के रोगमुक्त जीवन के बारे में सोचना होगा ।

आपके जीवन की बागड़ोर भले ही आपके हाथ में है लेकिन आपका साथ जिनकी ज़रूरत-ख्वाहिश-सपना है वो कभी नहीं चाहेंगे कि उन्हें आने वाले हर मदर्स-डे पर महज़ आपकी यादों, तस्वीरों से ही दिल बहलाना पड़े।

ज़रा सोचकर देखिए! कितनी सुंदर होगी उन सब की दुनिया जब याद आते ही पहुँच पायेंगे वे माँ से मिलने, जब आवाज़ सुनने का मन होगा, मिला लेंगे फ़ोनज्ज्जब हर मदर्स-डे पर सिर्फ़ आपकी यादें नहीं, आप भी होंगी उनके साथ।

तो मदर्स-डे भले ही बीत गया है लेकिन हमें ठान लेना है कि अपनों के साथ-साथ, अपना भी ख़्याल रखना है।

फोटो: अतुल परमार

गर्मी का प्रचंड प्रकोप, बचाव ही है राहत

मौसम

बाल मुकुन्द ओझा

लेखक पत्रकार हैं।

मई का यह तीसरा सप्ताह है और इसी के साथ गर्मी भी अपने चरम पर पहुंच रही है। हर साल ज्येष्ठ माह के दौरान सूर्य रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश करते हैं, जिस वजह से नौतपा लगता है। इस समय देशभर में गर्मी का प्रचंड प्रकोप दिखाई दे रहा है। भीषण गर्मी ने अपने तेवर दिखाने शुरू कर दिए हैं। दोपहर में चल रही गर्म हवाओं में बाहर निकलना मुश्किल हो गया है। लोगों को मजबूरी में बाहर निकलना पड़ रहा है। वहीं गर्मी के कारण लोगों के बीमार होने के मामले तेजी से बढ़ने लगे हैं जिससे अस्पताल में मरीजों की संख्या बढ़ने लगी है। थार मरुस्थली प्रदेश राजस्थान इस समय भीषण गर्मी की चपेट में है। हीट-वेव ने आम जनजीवन को पटरी से उतार दिया है। बाड़मेर में तापमान 47 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया है। वहीं, जैसलमेर में भी आसमान से आग बरस रही है।

अभी तक जहां सिर्फ मैदानी इलाकों में गर्मी पड़ रही थी, वहीं, अब पहाड़ी इलाकों में भी तापमान बढ़ने लगा है। समूचा भारत इस समय प्रचंड गर्मी से झुलस रहा है। मई में रिकॉर्ड तोड़ और आग उगलती गर्मी ने लोगों का जीना दूभर कर दिया है। कुछ स्थानों में तापमान 47 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच गया है। मई माह का दूसरा सप्ताह समाप्त होने के कगार पर है और भीषण गर्मी ने अपना रौद्र रूप दिखाने लगा है। कुछ दिनों से लगातार पारा चढ़ता जा रहा है। तपिश भरी गर्मी ने लोगों का हाल बेहाल कर दिया है। भीषण गर्मी, तपिश और लू से सड़कों पर चलना तक मुश्किल हो गया है। तीखी धूप ने ऐसा तांडव मचाया है कि लोगों का अपने घरों से बाहर निकलना दूभर हो गया है। घरों में नलो से गरम पानी निकल रहा है वहीँ बिजली की आंखमिचोली से लोग परेशां हो रहे है। तेज धूप होने के कारण हवा भी इतनी गर्म हो गई है कि हीट स्ट्रोक होने का खतरा बढ़ गया है। हीट स्ट्रोक होने के लक्ष्णों में तेज गर्मी के अहसास होने के साथ बैचेनी होती है। शरीर का तापमान बढ़ जाता है। अधिक तापमान के कारण बेहोशी भी आ जाती है। बार-बार प्यास लगती है। चेहरा लाल होने लगता है। सिर में दर्द भी होता है और जी मचलने के साथ उल्टियां होती है।

मौसम में हमें अपना ख्याल रखने की अधिक जरुरत होती है। अगर इस मौसम में आप जरा से भी चुके तो आपको कई बीमारियां घेर सकती है। यह एक ऐसा मौसम है जिसमें बीमारियां होने की आशंका अधिक होती है। डॉक्टरों का कहना है कि गर्मी से बचाव ही इस मौसम में बीमारियों से बचने का रास्ता है। इसके लिए पेय-पदार्थों का खूब सेवन करें। डॉक्टरों की सलाह है कि दिन में जब भी घर से निकले कुछ खा कर और पानी पी कर ही निकले खाली पेट बाहर ना जाएं। तेज धूप में, खासतौर से दोपहर में बेकाम घर से बाहर जाने से बचें। गर्मियों में हरे पत्ते वाली सब्जियां, विटामिन सी से युक्त रसीले फल और नींबू पानी लेना चाहिए। बेल का शरबत गर्मी के लिए बहुत बढ़िया माना जाता है। गर्मी के मौसम में जीरा-नमक डालकर छाछ पीना भी फायदेमंद होता है।

//भाषान्तर//

अनुवाद मणि मोहन

भाषान्तर में आज विश्व विख्यात अमेरिकन कवयित्री नाओमी शिहाब न्ये की एक कविता का अनुवाद।

उसने क्या कहा

विमान में बैठी एक स्त्री ने कहा नहीं!

हमें तुम्हारे बम और बंदूकें नहीं चाहिए।
हम नहीं चाहते कि वे
हमारे पहाड़ों के बीच
अपने लड़ाकू परिधान में
यहाँ अपने तम्बू गाडें
गुप्त योजनाएं बनाएं।

ये हेलीकाप्टर हमें भयभीत करते हैं।

हम चाहते हैं लड़कियां अपने स्कूल जाएँ, हाँ,
स्त्रियों के लिए आजादी , हमेशा,
जीवन के स्त्रोत के लिए
आजादी से इंकार क्यों?
इसकी जगह लड़ाईयाँ, युद्ध,
वर्षों से मारे जा रहे गाँव के लोग
देवदार के दरखतों के नीचे बिखरे उनके शव, क्यों?
सरल चीजें क्यों नहीं,
कुछ और विद्यालय,
और अस्पताल
भोजन?
करने के लिए
और बेहतर चीजें होनी चाहिए।

यहां आपका स्वागत नहीं है!

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

एम्स्टर्डम शहर उपद्रवियों को रोकने की उम्मीद ऑनलाइन क्विज के साथ करता है। इस क्विज को एम्स्टर्डम नियम कहा जाता है और इसका मकसद शहर के बारे में खोज है। यह उस बारे में पूछता है, जिनकी वजह से यहां यात्रा करना चाहते हैं। यदि आप जवाब देते हैं- किसी स्टैग पार्टी, पब क्रॉल या मारिजुआना के लिए तो निराश होंगे, क्योंकि अब इसकी इजाजत नहीं है। क्विज ने एम्स्टर्डम में बेतहाशा पार्टी की भीड़ कम करने की कोशिश की है।

एम्स्टर्डम के नए आइडिया से कोई हल नहीं निकला है। सैलानी बढ़ते जा रहे हैं। पिछले बरस नब्बे लाख सैलानी रात रुके थे। यूरोप के हालात चरमरा रहे हैं। टूरिज्म का जिन्न निकल आया है और अब उसे अंदर भेजने की ताकत नहीं है। यूरोप में हर साल सस्ती एयरलाइन दस फीसद बढ़ी है, जो दोगुनी से भी अधिक हो गई है। हर शहर में दस से साठ हजार के बीच सूचियां हैं। शहर घूमने आए लोगों से कहा है कि किसी को यह न बताएं कि छुट्टियां मनाने गए हैं। वे हमसे शहर छीन लेंगे और यह आपके और हमारे रहने काबिल नहीं रहेगा। बार्सिलोना ने भी सबसे अधिक सैलानी वाले इलाकों में नए होटलों पर रोक लगा दी है। बार्सिलोना में टूरिस्ट अपार्टमेंट सबसे ज़्यादा हैं। हजार के लिए बारह, जबकि रोम में दस और लंदन में सात हैं।

चाहे वेनिस हो या एम्स्टर्डम... सैलानियों की भीड़ से जूझ रहा है। एम्स्टर्डम की बात अकसर रेड लाइट इलाके और सैलनियों पर होती है। यह केवल समूह के कारण होने वाले उपद्रव के लिए नहीं है, सैलानियों की कुल तादाद पर ध्यान देने की जरूरत है। कई शहरों की दीवारों पर नजर आ रहा है कि टूरिस्ट का यहां स्वागत नहीं है, यही सोचने का वक्त है, वरना बाकी शहरों में भी नजर आने लगेगा, जो शहर और उसके बाशिंदों के लिए उतना ही बुरा होगा, जितना घूमने वालों के लिए।